

मयूरचित्रक आदि अनेक ग्रन्थ रचना किये जिससे पाठ्य-  
 गण थोड़ेही परिश्रमसे बहुत आचार्योंकी संमतिमें अभिलिखित  
 हो जावें, ये ग्रन्थ संस्कृतमें हैं परन्तु हालमें वर्तमान समय-  
 की ऐसी दशा हो गई कि, संस्कृतमें अल्प बोध होनेके  
 कारण साधारण श्रेणीके पण्डितोंकी समझमें आना दुर्लभ  
 जानकर आधुनिक पण्डितोंने ग्रन्थोंका भाषान्तर करना  
 प्रारम्भ किया है और वे भाषान्तर यत्र तत्र मुद्रित  
 होते चले जाते हैं, वराहमिहिराचार्यरुत ग्रन्थोंमेंसे बृह-  
 त्संहिता, बृहज्जातक, लघुजातक इन ग्रन्थोंका भाषान्तर  
 हो चुका है अब इस मयूरचित्रक नामक पुस्तकका भाषा-  
 न्तर हमने श्रीसेठ गंगाविष्णु श्रीरुष्णदासजी जो प्राचीन  
 नवीन पुस्तकोंके प्रकाश करनेमें कटिबद्ध हैं उनकी प्रेरणासे  
 सरल भाषामें किया है और इसका सब हक उक्त सेठजी-  
 को दिया है, इस ग्रन्थमें प्रत्येक वस्तुके समर्थ ( सस्ते )  
 मर्ह ( महँगे ) का विचार व प्रत्येक मासमें वर्षा आदि-  
 का सम्पूर्ण वृत्तान्त जाना जाता है, किन्तु इस छोटेसेही

ग्रन्थके आधारसे सम्बत्तर ( वर्षे पद्यन्त ) का सब हाल सहजहीमें पंडितजन कह सका है, ऐसा यह परमोत्तम ग्रन्थ सबही पंडितोंको एक २ प्रति अपने पास अवश्य रखना चाहिये.



गमयणनिधीन्द्वे मावे मामि निते दत्ते ।  
दक्ष्यां भृगुवारे च ज्ञापारम्भः कृतो मया ॥ १ ॥

गमयणनिधीनोंका निर्देश पण्डित—  
नागपणनमाद मुकुन्दरामजी मंस्त्रतपुरतका-  
लयाऽऽपन्न—चामबरेली और  
तत्समीपपुर ( अवध )

॥ श्रीः ॥

## अथ मधुरचित्रकस्य विषयानुक्रमणिका ।

|                                  |      |      |      |    |
|----------------------------------|------|------|------|----|
| १ ग्रन्थारम्भः                   | .... | .... | .... | १  |
| २ तत्रादौ त्रिविधोत्पाताः        | .... | .... | .... | ७  |
| ३ भाषाकारकृतमंगलाचरणम्           | .... | .... | .... | ७  |
| ४ तेषामप्यनेकमेदाः               | .... | .... | .... | २  |
| ५ अथ केतुचारफलम्                 | .... | .... | .... | ७  |
| ६ अथ केतुस्वरूपकथनं फलसाहितं च   | .... | .... | .... | ७  |
| ७ अथ धूम्रकेतुद्वयफलम्           | .... | .... | .... | ९  |
| ८ अथ प्रतिमासे केतुद्वयफलम्      | .... | .... | .... | १८ |
| ९ अथ ग्रहाणां योगफलम्            | .... | .... | .... | २१ |
| १० अथ संक्रान्तिप्रति उत्पातफलम् | .... | .... | .... | ४० |
| ११ अथ त्रिधा वृष्टियोगः          | .... | .... | .... | ४१ |
| १२ अथ कर्मकरसंक्रांती वारफलम्    | .... | .... | .... | ७  |
| १३ अथ अगस्त्योदयफलम्             | .... | .... | .... | ४२ |
| १४ अथ तिथिवृद्धिस्तथा क्षयफलम्   | .... | .... | .... | ७  |
| १५ अथ त्रयोदशदिनवक्षफलम्         | .... | .... | .... | ४३ |

|   |    |
|---|----|
| १६ अथ चैत्रादिमासेषु दिव्यादिबोगफलम् .... | ४३ |
| १७ तत्रादौ चैत्रमासफलम् ....              | ४४ |
| १८ अथ वैशाखमासफलम् ....                   | ४५ |
| १९ अथ ज्येष्ठमासफलम् ....                 | ४६ |
| २० अथाषाढमासफलम् ....                     | ४७ |
| २१ अथार्द्राप्रवेशफलम् ....               | ४८ |
| २२ अथ रोहिणीनक्षत्रविचारः ....            | ४९ |
| २३ अथ स्वातिनक्षत्रविचारः ....            | ५० |
| २४ अथ मेघलक्षणम् ....                     | ५१ |
| २५ अथाषाढपूर्णिमायां चवनचरीक्षा ....      | ५२ |
| २६ अथ श्रावणमासफलम् ....                  | ५३ |
| २७ अथ माद्रमासफलम् ....                   | ५४ |
| २८ अथ आश्विनमासफलम् ....                  | ५५ |
| २९ अथ कार्तिकमासफलम् ....                 | ५६ |
| ३० अथ मार्गशीर्षमासफलम् ....              | ५७ |
| ३१ अथ पौषमासफलम् ....                     | ५८ |
| ३२ अथ माघमासफलम् ....                     | ५९ |
| ३३ अथ फाल्गुनमासफलम् ....                 | ६० |
| ३४ अथ चैत्रवृष्टिलक्षणम् ....             | ६१ |
| ३५ अथ शुक्लार्द्रिलक्षणम् ....            | ६२ |

# विषयानुक्रमिका ।

|                                     |       |       |           |
|-------------------------------------|-------|-------|-----------|
| ३६ अथ जललग्नम्                      | ..... | ..... | ..... १   |
| ३७ अथ मेघनक्षत्रमाह                 | ..... | ..... | ..... १०  |
| ३८ अथ पुंस्त्रीनपुंसकनक्षत्राणि     | ..... | ..... | ..... ११  |
| ३९ अथ सूर्य तथा चन्द्रनक्षत्रसंज्ञा | ..... | ..... | ..... १०१ |
| ४० अथ सूर्यचन्द्रपरिवेपथ्यभागम्     | ..... | ..... | ..... १०४ |
| ४१ अथ सम्बत्सरलग्नफलम्              | ..... | ..... | ..... १०५ |
| ४२ अथ दुर्भिक्षलग्नम्               | ..... | ..... | ..... १०६ |
| ४३ अथ वृष्टिलक्षणम्                 | ..... | ..... | ..... १०७ |
| ४४ अथ सद्योवृष्टिलक्षणम्            | ..... | ..... | ..... ११  |
| ४५ अथ ग्रहचारफलम्                   | ..... | ..... | ..... ११० |
| ४६ अथ संक्रांतिवशेन शुभाशुभफलम्     | ..... | ..... | ..... ११२ |
| ४७ अथ तिथिवारपरत्वेन शुभाशुभफलम्    | ..... | ..... | ..... ११८ |
| ४८ ग्रन्थसमाप्तिः                   | ..... | ..... | ..... ११९ |
|                                     | ..... | ..... | ..... १२५ |

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,  
“लक्ष्मीविकटेश्वर” छापाखाना,

कल्याण-मुंबई.

॥ श्रीः ॥

## भाषाटीकासहितं मयूरचित्रकम् ।

तत्रादौ त्रिविधोत्पाताः ।

उदयास्तमनं केतोर्गणितेन प्रहास्यते ॥  
दिव्यभौमान्तरिक्षाश्च उत्पातास्त्रिविधा मताः ॥ १ ॥

भाषाकारकृतमंगलाचरणम् ।

प्रणम्य मास्करं देवं श्रीनारायणशर्मणा ॥

भाषा मयूरचित्रस्य ग्रन्थस्य प्रवितन्यते ॥

श्रीसूर्यनारायण जो प्रत्यक्ष देव तिसको प्रणाम करके श्रीना-  
रायणप्रसादशर्मण करके मयूरचित्रकनामक ज्योतिष ग्रन्थकी  
भाषा संग्रह रीतिसे की जाती है ॥

केतुका उदय और अस्त गणित करके जाना जाता है  
और दिव्य, भौम, अन्तरिक्ष यह भेद करके उत्पात तीन  
प्रकारके हैं, ऐसा अनेक आचार्योंका मत है ॥ १ ॥

( २ ) मयूरचित्रकम् ।

तेषामप्यनेकभेदाः ।

एकोत्तरशतं त्वेके सदस्रमपरे विदुः ॥

एकोपि बहुधा भाति प्राह वै नारदो मुनिः ॥ २ ॥

• तहां इन तीनोंके कोई एक सौ एक भेद कहते हैं और दूसरे आचार्य्य एक हजार भेद वर्णन करते हैं, एकभी बहुत प्रकारका होता है ऐसा नारदमुनिने कहा है ॥ २ ॥

अथ केतुचारफलम् ।

यावन्त्यहानि दृश्यन्ते तावन्मासैः फलं भवेत् ॥

मासे मासे च विज्ञेयमित्यूचुर्मुनयोपरे ॥ ३ ॥

केतुका तारा जितने दिनोंतक आकाशमें दीख पड़े उतने महीनोंतक केतुका फल होता है, अन्यमुनि कहते हैं, कि महीने महीनेमें फल जानना अर्थात् जिस महीनेमें उदय होय उसीमें उसका फल जानना ॥ ३ ॥

अथ केतुस्वरूपकथनं फलमहितं च ।

सुस्निग्धो रुचिरः सूक्ष्मो ऋजुः शुक्लः शुभप्रदः ॥

विपरीतोऽशुभः केतुस्त्रिशिखेन्द्रधनुःप्रभः ॥ ४ ॥

भाषाटीकासहितम् । ( ३ )

सुन्दर चिकना, मनोहर, छोटा, सीधा, श्वेतवर्ण ऐसा  
केतु शुभ देनेवाला होता है, इससे विपरीत तीन शिखा-  
वाला इन्द्रधनुषके आकार केतु अशुभ जानना ॥ ४ ॥

मुक्ताकनकसंकाशाः पंचविंशतिसंख्यकाः ॥

प्राक्परस्यां च ते दृष्टाः सूर्यपुत्रा भयप्रदाः ॥ ५ ॥

मोती और मोतीकीसी कान्तिवाले पचीस तारे चोटी-  
वाले सूर्यके पुत्र हैं, वे पूर्व तथा पश्चिममें दीख पड़ें तो  
भयदायक जानने ॥ ५ ॥

बहुवर्णाग्निसंकाशा सशिखा पंचविंशतिः ॥

आग्नेय्यां दिशि संहृष्टा वह्निपुत्रा भयप्रदाः ॥ ६ ॥

अनेक रंगके अग्निसमान कान्तिवाले चोटीदार पचीस  
तारे अग्निके पुत्र हैं, वे अग्निदिशामें दीख पड़ें तो भयके  
देनेवाले होते हैं ॥ ६ ॥

याम्याशासंस्थिताः कृष्णा ऋक्षा वक्रशिखास्तथा ।

सावन्तो वै मृत्युसुताः प्रजाक्षयकराः स्मृताः ॥ ७ ॥

दक्षिणदिशामें स्थित कृष्णवर्ण ( काले रंग ) के तथा



( ४ )

मयुरचित्रकम् ।

टेढी चोटीवाले पचीस नक्षत्र यमके पुत्र हैं वे मजाके क्षय करनेवाले होते हैं ॥ ७ ॥

वृत्ताकाराश्च विशिखा जलतेलसमप्रभाः ॥

द्राविशद्भूमिपुत्राश्च दुर्भिक्षायेऽदिगताः ॥ ८ ॥

गोल आकार और जलमें डाले गये तेलके समान कान्तिवाले चोटीदार बाईस तारे पृथिवीके पुत्र हैं वे ईशान् दिशामें दीख पड़ें तो दुर्भिक्ष करनेवाले जानने ॥ ८ ॥

हिमरश्मिहिरण्याभास्त्रयश्चंद्रसुताः स्मृताः ॥

उत्तरस्यां यदा दृष्टास्तदा शुभफलप्रदाः ॥ ९ ॥

चन्द्रमा और सुवर्णकीसी कान्तिवाले तीन नक्षत्र चन्द्रमाके पुत्र हैं जो वे उत्तरदिशामें दीख पड़ें तो शुभ फल देनेवाले जानने ॥ ९ ॥

कूरस्त्रिवर्णस्त्रिशिख एको ब्रह्मसुतः स्मृतः ॥

सर्वास्पाशासु संदृष्टो ब्रह्मदण्डक्षयावहः ॥ १० ॥

कूर ( बहुत चमकीला ) और तीन रंगवाला तथा तीनही शिखा ( चोटी ) हैं जिसके ऐसा एक तारा ब्रह्माका

पुत्र है वह सब दिशाओंमें किसी दिशामें दीख पड़े तो बलबुद्धसे क्षयकारी होता है ऐसा जानना ॥ १० ॥

विसर्पाख्याः शुक्रसुताः सुस्निग्धाः श्वेततारकाः ॥

चतुरशीतिसंख्याकाः पुरा दृष्टा भयप्रदाः ॥ ११ ॥

सुन्दर चिकने श्वेत ( सफेद ) वर्णवाले, विसर्प नामके चौरासी नक्षत्र पूर्वदिशामें दीख पड़ें तो भयके देनेवाले जानने ॥ ११ ॥

सुस्निग्धा द्विशिखाश्चैव पाष्टिश्च कनकाह्वयाः ॥

शनेश्वरसुता घोरा दुःखदाः केतुतारकाः ॥ १२ ॥

बहुत चिकने और दो चोटीवाले, सुवर्णकी कान्ति-समान कनकनामके साठ तारे शनेश्वरके पुत्र हैं, ये केतु-तारे घोर और दुःखके देनेवाले हैं ॥ १२ ॥

एकतारा महास्वल्पाः शोपाः श्वेता महाप्रभाः ॥

सशिखाश्च गुरोः पुत्राः प्रायशो दक्षिणाश्रयाः ॥ १३ ॥

नामतोऽधिकचा घोरा पाष्टिपंचाधिकाः स्मृताः ॥

सौम्यपुत्रास्तारकाख्याः सर्पादिप्रभवाश्च ते ॥ १४ ॥

( ६ ) मयूराचित्रकम् ।

नाऽतिव्यक्ताश्च रूक्षाश्च श्वेतरूपा भयावहाः ॥

एकाधिकाश्च पंचाशत्केतवः परिकीर्तिताः ॥ १५ ॥

एक तारा बहुत छोटा जिनका श्वेतवर्ण बहुत चमकीले और चोटीवाले बृहस्पतिके पुत्र दक्षिण दिशामें रहनेवाले ॥ १३ ॥ अधिकचनामके पैसठ तारे घोर भयकारी हैं और बुधके पुत्र तारकनामके सम्पूर्ण दिशाओंमें प्रकाश होनेवाले ॥ १४ ॥ मन्दप्रकाशक और रूखे श्वेत वर्ण नामके देनेहारे इक्यावन.केतुके तारे पूर्वाचार्योंने कहेहैं ॥

षष्टिः कुजात्मजाः रक्ता कौंकुमाः सौम्यादिगजाः ॥

त्रिशिखाश्च त्रिताराश्च महापापफलप्रदाः ॥ १६ ॥

रक्तवर्ण तथा केसरके रंगके साठ नक्षत्र मंगलके पुत्र हैं, वे तीन शिखावाले एक एकके तीन तीन दीख पड़ते हैं ऐसे तारे उत्तर दिशामें दीखे हुए महा अशुभ फलके देनेवाले जानने ॥ १६ ॥

राहुपुत्रास्त्रयस्त्रिंशत्ख्यातास्तमसकीलकाः ॥

चन्द्राऽर्कमण्डलस्यैवं लोकानां कष्टदायकाः ॥ १७ ॥

तेतीस केतुतारे राहुके पुत्र तमसकीलक नामके चन्द्र-  
मंडल और सूर्यमण्डलमें निवास करते हैं, यह दीखे दुए  
तारे लोकको कष्ट देनेवाले होते हैं ॥ १७ ॥

नानावर्णाग्निपुत्राश्च किरन्तोऽग्निद्विचाडिनः ॥

विंशोत्तरशतं विश्वरूपा वद्विभयप्रदाः ॥ १८ ॥

अनेक रंगके अग्निको वर्णानेवाले दो दो चाटीदार,  
विश्वरूपनामके एक सौ बीस तारे अग्निके पुत्र हैं ऐसे  
देखे भये तारे भयके देनेवाले होते हैं ॥ १८ ॥

अरुणाख्या वायुपुत्रा वर्णतः श्यामलोहिताः ॥

विताराश्चामरप्रख्या भयदाः सप्तसप्ततिः ॥ १९ ॥

अरुणनामके श्यामलोहितवर्ण - अर्थात् काले और  
लाल रंगके, चमरके आकार सप्तहत्तर तारे वायुके पुत्र हैं  
सो दीख पडे तो भयके देनेवाले जानने ॥ १९ ॥

प्रजापतिसुताश्चाष्टौ तारामंडलवर्तिनः ॥

तारापुंजप्रतीकाशा गणका भयदायिनः ॥ २० ॥

तारा ( नक्षत्र ) मंडलमें रहनेवाले, नक्षत्रोंके गुच्छा-

( ८ )

मयूरचित्रकम् ।

के समान गणकनाम आठ तारे प्रजापतिके पुत्र हैं वे तय-  
दायक जानने ॥ २० ॥

द्वे शते चैव चत्वारः सशिखाः श्वेतरश्मयः ॥

चतुरस्रा ब्रह्मपुत्रा महाभयकरा मताः ॥ २१ ॥

दो सौ चार तारे चोटीवाले श्वेत किरण जित्नी और  
चौकोन वे ब्रह्माके पुत्र महाभय करनेवाले हैं ॥ २१ ॥

वंशगुल्मसमाः प्रोक्ता द्वाविंशदरुणात्मजाः ॥

शशिप्रभाश्च काकाख्याः केतवः कष्टदा मताः ॥ २२ ॥

वांसीके गुच्छोंके सदृश बाईस तारे चन्द्रमाकीसी  
कान्तिवाले काकनामके वरुणके पुत्र हैं सो आकाशमें  
दीख पड़ें तो यह केतुतारे कष्टके देनेवाले जानने ॥ २२ ॥

कालपुत्राः कबन्धाख्याः कबन्धसदृशारुणाः ॥

पण्णवतिश्च भयदा हिमराश्मिसमप्रभाः ॥ २३ ॥

कबन्धनामके बिना शिरवाले नराकार रक्तवर्ण चन्द्र-  
माकीसी कान्तिवाले छ्यानव तारे कालके पुत्र हैं दीख  
पड़ें तो भयके देनेवाले होते हैं ॥ २३ ॥

विदिवपुत्रास्त्वेकतारा विदिक्षु च समाश्रिताः ॥

नवसंख्याश्च विपुला महाभयनिवेदनाः ॥ २४ ॥

एकही समान विदिशाओंमें रहनेवाले बड़े बड़े नव  
नक्षत्र विदिशाके पुत्र हैं वे महाभयके देनेवाले होते हैं २४ ॥

अथ धूम्रकेतूदयफलम् ।

उत्तरस्यां महास्थूलो निर्मलश्चापरोदयी ॥

दृष्टः करोति मरणं पश्चादन्नसमृद्धिकृत् ॥ २५ ॥

उत्तरदिशामें बड़ा मोटा निर्मल कांतिवाला एक तारा  
उदय होनेसे लोकमें मृत्यु करनेवाला होता है, पश्चात्  
अन्नकी वृद्धि करता है ॥ २५ ॥

अस्ति केतुः श्वेतचिह्नः कर्कशः क्षुधयावहः ॥

दृष्टः प्राच्यां च शस्त्राख्यस्तादृक् स्निग्धश्च पापदः ॥

श्वेत ( सफेद ) चिह्नका चोटीवाला शस्त्रनाम जो केतु  
तारा है सो पूर्वदिशामें दीख पड़े तो क्षुधासे मय देनेवाला  
होता है, यदि वही स्निग्ध ( चिकना ) होवे तो पापका  
देनेवाला जानना ॥ २६ ॥

कपालाख्यो धूम्रशिखो दृष्टः सर्वजलापहः ॥  
प्राग्व्योमार्द्धविहारी स्यात्तथा क्षुन्मृत्युकारकः ॥ २७ ॥

कपालनामक तारा जो धुआँके समान चोटीवाला पूर्व-  
दिशामें आधे आकाशतक फैला हुआ होता है, वह दीख  
पड़े तो सम्पूर्ण जलको नाश करनेवाला अर्थात् अवर्षण  
करनेवाला तथा क्षुधा और मृत्युका करनेवाला होता है,  
बड़ा भारी काल पड़े ऐसा जानना ॥ २७ ॥

प्रागग्निमार्गः स्थूलाग्रो दृष्टः स्यादरुणप्रभः ॥  
व्योमत्रिभागगामी च रोद्रः क्षुद्भयकारकः ॥ २८ ॥

पूर्व और अग्निदिशामें फैला हुआ लाल रंगका आगेसे  
मोटा एक भयानक तारा दीख पड़े तो वह क्षुधासे भयका  
करनेवाला अर्थात् महादुर्भिक्ष करनेवाला होता है ॥ २८ ॥

पश्चिमाशास्थितो यस्तच्छिखायाम्याग्रसंस्थितः ॥  
यथा यथोदयं गच्छेत्तथा दैव्यं प्रयात्यसौ ॥ २९ ॥  
संपृशन्वे मुनीन्सप्त ध्रुवं चाभिजितं तथा ॥

व्योमार्द्धमात्रं भित्त्वा वै याम्येनास्तं प्रयाति च ३० ॥

पश्चिमदिशामें स्थित जो चोटीवाला दक्षिणकी ओरके  
अधभाग जिसका सो जैसे जैसे उदय होता जावे तैसे  
तैसे उसकी चोटी बढ़ती जाती है ॥ २९ ॥ और सप्त-  
ऋषि, ध्रुव तथा अतिजित इन नक्षत्रोंको स्पर्श करता हुआ  
आधे आकाशतक फैलकर दक्षिणदिशामें अस्त हो जाता  
है ॥ ३० ॥

आप्रयागादवन्ति च पुष्कराण्यमेव च ॥

मध्यदेशमुदग्भागं देवकारण्यं तथैव च ॥ ३१ ॥

धवलारण्यो निहन्त्याशु केतुर्दुःखभयप्रदः ॥

देशध्वन्येषु दुर्भिक्षं दशमासावपि स्मृतम् ॥ ३२ ॥

यह देवक तथा धवल नामका तारा प्रयागसे लेकर पुष्क-  
रवन तथा मध्यदेशके उत्तरभागसे दक्षिण उज्जैन नगरीतक-  
के अन्तर्गत जो देश हैं ॥ ३१ ॥ उनको यह केतुतारा  
शीघ्र नाश करता और दुःख भयको देनेवाला है, अन्यदे-  
शोंमें दस महीनेपर्यन्त दुर्भिक्षको करनेवाला जानना ३२ ॥

धूम्राकारा शिखा यस्य कृत्तिकायां समाश्रिता ॥



दृश्यते रश्मिकेतुः स्यात्सप्ताहानि शुभप्रदः ॥ ३३ ॥

धुआके आकार चोटी जिसकी छत्तिकानक्षत्रसे लगी हुई ऐसा रश्मिकेतुनाम तारा होताहै तो सात दिनतक आकारमें दीख पड़े तो शुभ फलका देनेवाला जानना ॥ ३३ ॥

त्रयोदशर्क्षे याम्यादौ दृष्टो धूम्राह्वयः शिखी ॥

महाभयकरः प्रोक्तो ज्येष्ठाया वा समाश्रितः ॥ ३४ ॥

सप्ताहाभ्यधिको दृष्टो दशवर्षाणि दुःखदः ॥

गृहपर्वतवृक्षेषु सेनागोपुष्करेषु च ॥ ३५ ॥

दिव्यान्तरिक्षभौमाख्यो धूम्रकेतुः प्रदृश्यते ॥

यदा तदा विनाशाय प्राणिनां भवाति ध्रुवम् ॥ ३६ ॥

जो धूम्रकेतु ताराकी शिखा ( चोटी ) हस्तनक्षत्रमें वा भरणीमें अथवा ज्येष्ठानक्षत्रमें लगी हुई होवे तो यह तारा महाभयकारी कहा है ॥ ३४ ॥ रश्मिकेतु तारा जो सात दिनसे अधिक दिन दीख पड़े तो दशवर्षतक दुःख देनेवाला होताहै तथा घर, पर्वत, वृक्ष, सेना, गो-शाळा, पुष्पवाटिका इन स्थानोंके विषे ॥ ३५ ॥ दिव्य

अन्तरिक्ष, भौम नाम धूम्रकेतुका जो तारा है सो दीख पडे तो निश्चयकरके प्राणियोंका नाश करनेवाला होता है ३६  
सकृद्यामेकदृष्टश्च मण्याख्यः सूक्ष्मतारकः ॥

शिखास्यसूक्ष्माऋज्वीच पंचमासान्सुभिक्षकृत् ३७  
धूम्रकेतुका छोटा तारा मणिनामका जिसकी छोटीसी चोटी सीधी होती है, ऐसा तारा एक बार एक पहरतक दीख पडे तो पांच मासतक सुभिक्षका करनेवाला होता है ॥ ३७ ॥

जलकेतुर्महास्निग्धा शिखा यस्यापरोन्नता ॥  
दृष्टः करोति शान्तिं च नव मासान्सुभिक्षकृत् ३८ ॥  
बहुत चिकना पश्चिमकी ओर ऊँची चोटीवाला जल-केतुनामका तारा दीखे तो नव मासतक सुभिक्ष और शान्तिको करता है ॥ ३८ ॥

भवेत्केतोश्च सुस्निग्धा हरिपुच्छोपमा शिखा ॥  
सूक्ष्मेकतारा प्राग्दृष्टा लोकानां शुभदा मता ॥ ३९ ॥  
एक सुन्दर चिकना बौदेकी पुच्छसरीखी चोटीवाला

( १४ ) मयूरचित्रकम् ।

छोटा केतु तारा पूर्वदिशामें दीख पड़े तो लोकोंको शुभ देनेवाला होताहै ऐसा जानना ॥ ३९ ॥

पद्मकेतुमृणालाभः पश्चिमायां प्रदृश्यते ॥

निशमेकां तदा सप्त वर्षाणि च सुभिक्षकृत् ॥ ४० ॥

पद्मकेतुनामक तारा कमलनालके समान पतली चोटी वाला पश्चिमदिशामें दीख पड़े तो सात वर्षतक सुभिक्षा करनेवाला जानना ॥ ४० ॥

आवर्तकः सव्यशिखो निशाद्धे संप्रदृश्यते ॥

यावन्मुहूर्तान् रक्ताभस्तावन्मासान्सुभिक्षकृत् ॥ ४१ ॥

जिसके बायें ओर चोटी होय ऐमा आवर्तकनामका तारा लाल रंगका अर्धरात्रिसमय जितने मुहूर्ततक दीख पड़े उतनेही मासतक सुभिक्ष करनेवाला जानना ॥ ४१ ॥

सन्ध्याकाले पश्चिमायां शूलाकारोरुणप्रभः ॥

वियत्रयशं समाक्रम्य स्थितो यः संप्रदृश्यते ॥

यावन्मुहूर्तास्तावन्ति वर्षाण्यशुभदः स्मृतः ॥ ४२ ॥

जो संध्यासमय पश्चिमदिशामें शूलके आकार लाल

रंगका तारा आकाशके तिहाई भागमें फैला हुआ दीख पड़े  
जितने मुहूर्तपर्यन्त दिखाई देवे उतने वर्ष शुभका देनेवाला  
कहा है यहां दो घडीका मुहूर्त जानना ॥ ४२ ॥

यस्मिन् ऋक्षे स्थितः केतुराकाशे संप्रदृश्यते ॥

तदिष्टग्रहान्समाहन्ति ऋक्षदेशान् वदामि तत् ॥ ४३ ॥

जिस नक्षत्रपर स्थित भया केतु आकाशमें दीख पड़े  
तो उस नक्षत्रकी दिशाके देशोंको नाश करे है अब कौनसे  
नक्षत्रपर कौन देशका नाश करे है सो कहता हूं ॥ ४३ ॥

अश्विन्यामश्वकं हन्ति याम्ये केतुः किरातकान् ॥

वह्नौ कलिगन्तृपतीन् रोहिण्यां शूरसेनकान् ॥ ४४ ॥

अश्विनीनक्षत्रमें जो केतुका उदय हो तो अश्वकदेश-  
को नाश करता है, भरणीनक्षत्रमें केतु उदय होनेसे किरात-  
देशको, कृत्तिकामें कलिगके राजाको, रोहिणीमें शूरसेन-  
देशको नाश करे है ॥ ४४ ॥

औशीनरं मृगे रौद्रे जलजीवाधिपे तथा ॥

अदितोऽमकनाथं च पुण्ये च मगधाधिपम् ॥ ४५ ॥

( १४ )      मयूरचित्रकम् ।

अशिकेशं च भौजंगे मघायां चागनायकम् ॥

भगभे पाण्डुनाथं च अथ्यम्णे चोज्जयिन्यकम् ४६॥

मृगशिरा और आर्द्रापर केतुका उदय हो तो औशी-  
नर तथा जलजीवोंके स्वामीको हानि पहुँचावे और पुन-  
र्वसुपर अश्मकदेशके राजाका, पुण्यमें मगधदेशके राजाका  
॥ ४५ ॥ और आश्लेषामें अशिकेशदेशका, मघापर  
अंगदेशके राजाका, पूर्वाफाल्गुनीमें पाण्डुदेशके राजाका,  
उत्तराफाल्गुनीमें उज्जैनका नाश करे ॥ ४६ ॥

कुरुक्षेत्राधिपं त्वाष्ट्रे हस्ते दंडकनायकम् ॥

वाते कांबोजकाश्मीरौ द्विदैवे कोशलाधिपम् ॥ ४७ ॥

मेत्रे पौड्राधिनाथं च सार्वभौमं पुरन्दरे ॥

मूले भद्राधिनाथं च जलदेवे च काशिपम् ॥ ४८ ॥

चित्रामें केतुदय हो तो कुरुक्षेत्रके राजाका, हस्तपर हो  
तो दण्डकदेशके राजाका, स्वातिमें कांबोज और काश्मी-  
रका, विशाखापर हो तो कोशलदेशके राजाका ॥ ४७ ॥

अनुराधापर पौड्रदेशके राजाका, ज्येष्ठापर सब देशोंके

भाषाटीकासहितम् । ( १७ ) .

राजाओंका, मूलमें भद्रदेशके राजाका, पूर्वाषाढापर हो तो काशीके राजाका नाश करे ॥ ४८ ॥

योधे चार्जुनचैद्यांश्च वैश्वदेवे विधिं तथा ॥

श्रवणे केकयाथीशं पांचालं वासवे तथा ॥ ४९ ॥

वारुणे सिंहलपतिं पूर्वाभाद्रे च बंगपम् ॥

अहिर्बुध्न्ये नैमिषपं रेवत्यां केरलाधिपम् ॥ ५० ॥

उत्तराषाढापर तथा अभिजित् नक्षत्रपर केतुका उदय हो तो योधदेश अर्जुनदेश और चंदेलीके राजाका, श्रवणपर केकयदेशके राजाका तथा धनिष्ठामें पांचाल (पंजाब) देशके राजाका ॥ ४९ ॥ शतभिषानक्षत्रमें सिंहलदेशके राजाका, पूर्वाभाद्रपदापर बंगालदेशके राजाका, उत्तराभाद्रपदापर नैमिषपतिका, रेवतीपर केरलदेशके स्वामीका केतु नाश करे है ॥ ५० ॥

यस्यां दिश्युदयं याति केतुस्तामभियोजयेत् ॥

यतो यतः शिखा याति राजा गच्छेत्ततस्ततः ५१ ॥

जिस दिशामें केतुदय होता है उस दिशाको नाश क-

( १८ )

मयुराचित्रकम् ।

रनेवाली जावना और जिस दिशामें केतुकी चोटी तक फैलती है, वहांही राजाको नाश करनेवाला जानना ॥ ५१ ॥

पंचोत्तराशतं त्वंके केतूनां प्रवदन्ति च ॥

चतुर्दश रवेः पुत्रा वरुणस्य दशैव तु ॥ ५२ ॥

अग्निपुत्राश्चतुस्त्रिंशद्यमस्य : नव कीर्तिताः ॥

अष्टादश कुबेरस्य वायोर्विंशतिरीरिताः ॥ ५३ ॥

कोई एक आचार्य एक सौ पांच केतु वर्णन करते हैं, उनमें चौदह सूर्यके पुत्र हैं, दश केतु वरुणके पुत्र हैं ॥ ५० ॥ और चौतीस अग्निके पुत्र हैं, नव यमके पुत्र कहे हैं, अठारह कुबेरके पुत्र हैं, बीस केतु वायुके पुत्र कहे हैं यह सब १०५ केतु कहे हैं ॥ ५३ ॥

अथ प्रतिमासे केतूदयफलम् ।

आश्विने : कार्तिकेः सूर्यपुत्राणामुदयं - यदि ॥

मेघा जलं न मुंचन्ति दुर्भिक्षं च तदादिशेत् ॥ ५४ ॥

चतुष्पदा विनश्यन्ति - राजानः कलहप्रियाः ॥

नारायणेन लिखितं मिहिरेण च भाषितम् ॥ ५५ ॥

आश्विन ( कुंवार ) और कार्तिक मासमें सूर्यके पुत्र जो १४ केतु हैं उनका उदय होवे तो मेघ जल नहीं वर्षे और दुर्भिक्ष ( अकाल ) पड़े ॥ ५४ ॥ तथा चौपायोका नाश होवे, राजाओंमें कलह होवे यह नारायणने लिखा और वराहमिहिराचार्यने वर्णन किया है ॥ ५५ ॥

वारुणा उदयं याति श्रावणे च नभस्यके ॥  
स्यात्पृथ्वी जलसस्याढ्या लोकाश्चानन्दसंयुताः ५६

वरुणके पुत्र जो दश केतु सो श्रावण और माघमासमें उदय होवे तो पृथिवी जल और धान्यसे युक्त होवे और सम्पूर्ण मनुष्य आनन्दमें संयुक्त हों ॥ ५६ ॥

मार्गं मासि तथा पौषे दृश्यन्ते बह्विपुत्रकाः ॥  
अग्निचौरभयं तत्र प्रजा नाशं प्रयान्ति च ॥ ५७ ॥

मार्गमास तथा पौषमासमें अधिक पुत्र ३४ केतु दृश्य पड़े तो अग्नि चौरसे भय होवे, और प्रजाका नाश हो ॥ ५७ ॥



( २० ) मयूरचित्रकम् ।

पृथिवी भयसंयुक्ता प्राणिनां व्याधिमादिशेत् ॥  
चैत्रमाधवमासे तु कुबेरस्यात्मजः किल ॥ ५८ ॥  
यान्त्युद्गमं तदा मेघा बहुवारिप्रदा मताः ॥  
धनधान्ययुता पृथ्वी प्रजाश्चानन्दसंयुताः ॥ ५९ ॥

और पृथिवीपर भय होवे तथा प्राणियोंमें रोग उत्पन्न होवे चैत्र और वैशाखमासमें कुबेरके पुत्र जो १८ केतु हैं ॥ ५८ ॥ वे जो उदय होवें तो मेघ, बहुत जल वर्षे, और पृथिवी धनधान्यसे परिपूर्ण होवे, तथा प्रजा सुखी होवे ॥ ५९ ॥

यमजाश्चोदयं यान्ति माघफाल्गुनयोः किल ॥

पृथिवी भयसंयुक्ता दुर्भिक्षं च समादिशेत् ॥ ६० ॥

यमके पुत्र जो केतु ९ हैं सो माघ वा फाल्गुनमें उदय होवे तो पृथिवीपर भय हो तथा दुर्भिक्ष ( अकाल ) पड़े ॥ ६० ॥

वायुपुत्राः प्रदृश्यन्ते ज्येष्ठमासे शुचौ - तथा ॥

उद्धता वांति वाता वै दिशश्च रजसा वृताः ॥ ६१ ॥

पतन्ति गिरिशृंगाणि निपतन्ति महीरुहाः ॥

चौराग्निजानिता पीडा राजानः कलहप्रियाः ॥ ६२ ॥

वायुके पुत्र ( २० केतु ) के तारे ज्येष्ठमास तथा  
आषाढमासमें दीख पड़ें तो निश्चय प्रचंड पवन चले और  
दिशाये धूलमे ढक जावे ॥ ६१ ॥ पर्वतोंके शिखर गिर  
जाय, वृक्ष उखड़ जाय, चोरांसे तथा अग्निसे पीडा होवे  
राजाओंमें कलह ( लडाई ) होवे ॥ ६२ ॥

अथ ग्रहाणां योगफलम् ।

रौद्रनक्षत्रगावेतौ यदि सूर्यमहीसुतौ ॥

मासं महर्षतां यान्ति धान्यानि स्वस्थता पुनः ॥ ६३ ॥

अब आगे ग्रहोंके योगोंके फल वर्णन करते हैं, जो  
आर्द्रनक्षत्रपर सूर्य मंगल होवे तो एकमासपर्यन्त अन्न  
महंगा रहे, उपरांत भाव सस्ता हो जावे ॥ ६३ ॥

भानुकेतु च भरणी मृगं वा यदि चास्थितौ ॥

लवणं महर्षतां याति सिधुदेशोद्भवं विडम् ॥ ६४ ॥

सूर्य और केतु जो भरणी वा मृगशिरानक्षत्रपर स्थित

( २२ )

मधुरचित्रकम् ।

होवे तो सिंधुदेशमें उत्पन्न लवण ( सेंधानमक ) और  
विड ( सांघर ) लवण महंगा होवे ॥ ६४ ॥

बुधशुक्रमहीपुत्रा भुजंगर्क्षे समाश्रिताः ॥

नन्दन्ति लोकाः सुखिनः सुभिक्षं जनयन्ति च ६५

जो बुध, शुक्र और मंगल यह तीनों आश्लेषा नक्षत्रपर  
स्थित हों तो लोकमें मनुष्यादि सुखी हों और सुभिक्ष  
( सस्ता ) भाव होवे, सम्बत्सर अच्छा होवे ॥ ६५ ॥

स्वातिं याति यदा भौमो रेवती यदि भास्करः ॥

चलचित्ता महीपालाः प्रजा नाशं प्रयाति च ॥ ६६ ॥

जो स्वातिका मंगल होवे और रेवतीका सूर्य होवे तो  
राजाओंका चित्त चलायमान हो प्रजाका नाश होवे ॥ ६६ ॥

अनुराधां गतः शौरिज्येष्ठायां च बृहस्पतिः ॥

पश्चिमायां तदा युद्धं प्रजा नाशं प्रयाति च ॥ ६७ ॥

जो अनुराधानक्षत्रपर शनैश्वर और ज्येष्ठापर बृहस्पति  
होवे तो पश्चिममें युद्ध और प्रजाका नाश होवे ॥ ६७ ॥

मूले मन्दो बुधः स्वात्यां मघायां चन्द्रमा यदि ॥

संग्रहे सर्वधान्यानां लाभो भवति नान्यथा ॥ ६८ ॥

जो मूलनक्षत्रका शनैश्वर और स्वातिका बुध मघाका चन्द्रमा होवे, तब सब अन्नोको संग्रह करनेसे लाभ होता है इसमें संशय नहीं जानना ॥ ६८ ॥

विश्वेशभे भगे मन्दाः सप्तमर्क्षे यदा रविः ॥

तदा जलविनाशः स्यात्प्रजानां कदनं महत् ॥ ६९ ॥

उत्तराषाढा नक्षत्रपर वा पूर्वाफाल्गुनीनक्षत्रपर शनैश्वर होवे और पुनर्वसुमें सूर्य हो तो जलका विनाश (अवर्षण) और प्रजाको पीडा बहुत होवे ॥ ६९ ॥

श्रवणर्क्षे यदा क्रूरो ग्रहः कश्चित्समाश्रितः ॥

अन्नं महर्घतां याति गोधूमाश्च विशेषतः ॥ ७० ॥

जब श्रवणनक्षत्रपर कोई क्रूर ग्रह स्थित होवे तो अन्न महँगा होता है, विशेषकरके गेहूँ महँगा हो जाता है ॥ ७० ॥

वासवर्क्षे यदा शीरिर्भूमिपुत्रेण संयुतः ॥

न वर्षति जलं मेघाः सस्यदानिश्च जायते ॥ ७१ ॥

जो मंगलके साथ शनैश्वर धनिष्ठानक्षत्रपर होवे तो

( २४ )

मयूरचित्रकम् ।

मेघ जल नहीं वर्षे अर्थात् वृष्टि नहीं होवे और धान्यकी हानि होवे ॥ ७१ ॥

वारुणे च यदा जीवश्चित्रायां धरणीसुतः ॥

तदा नश्यन्ति गोधूमाः सस्यंहानिर्महर्घता ॥ ७२ ॥

जो शतभिषाका बृहस्पति और चित्राका मंगल हो तो गेहूं नहीं होवे और सस्यकी हानि होवे तथा अन्न महंगा होवे ॥ ७२ ॥

भानुभौमो भृगुश्चैव शनिक्षेत्रे समाश्रिताः ॥

यदा निशापतिस्तत्र तदा दुर्भिक्षतो भयम् ॥ ७३ ॥

जो सूर्य मंगल और शुक यह तीनों शनैश्वरकी राशि ( मकर कुंभ ) में स्थित हों चन्द्रमाभी साथमें हो तो दुर्भिक्षसे भय होवे अर्थात् अकाल पड़े ॥ ७३ ॥

वृषे राहुर्यदा भौमः पष्टे मासि महाभयम् ॥

भवत्यत्र न सन्देहस्तदा दुर्भिक्षपीडनम् ॥ ७४ ॥

जो वृषराशिका राहु और मंगल होवे तो छठे

महीनेमें महाभय और दुर्भिक्ष पीडा होवे इसमें संदेह नहीं करना ॥ ७४ ॥

मिथुनक्षे सूर्यपुत्रो राहुर्वा यदि संस्थितः ॥

दुर्भिक्षं जायते तत्र पश्चिमायां नृपक्षयः ॥ ७५ ॥

जो मिथुनराशिका शनि हो अथवा राहु होवे तो दुर्भिक्ष होवे और पश्चिममें राजाओंका क्षय होवे ॥ ७५ ॥

रविराहुमङ्गोपुत्राः शशिशुक्रशनेश्वराः ॥

एकराशिं गता ह्येते तदा पृथ्वी भयाकुला ॥ ७६ ॥

जो सूर्य, राहु, मंगल, चंद्रमा, शुक्र, शनैश्वर ये ग्रह एक राशिमें स्थित हों तो पृथिवी भयसे आकुल होय अर्थात् पृथिवीपर सब मनुष्य जयसे युक्त हों ॥ ७६ ॥

पूर्वदेशे महापीडा नृपाणां संक्षयो भवेत् ॥

प्रजानाशो व्याधिभयं तस्मिन्कालेन संशयः ॥ ७७ ॥

और पूर्वके देशोंमें महापीडा व राजाओंका क्षय होवे तथा प्रजाका नाश और व्याधिसे जय होवे उस समयमें ऐसा हो इसमें कुछ संदेह नहीं ॥ ७७ ॥

सूर्यारचन्द्रमन्दाश्च राहुचन्द्रसुता यादि ॥

एकराशि गता ह्येते दक्षिणस्यां भयप्रदाः ॥ ७८ ॥

सूर्य, मंगल, चन्द्र, शनि, राहु, बुध ये ग्रह एकराशिमें स्थित हों तो दक्षिण दिशामें भय देवे ॥ ७८ ॥

एकराशिं गता ह्येते कुजाऽर्कशानिराहवः ॥

शुक्रो गुरुश्च तत्रैव तदा भयविवर्धनः ॥ ७९ ॥

एकराशिमें मंगल, सूर्य, शनि, राहु, शुक्र, गुरु हों तो जगत्में भयकी वृद्धि होवे ॥ ७९ ॥

उत्तरे क्षत्रभंगः स्यान्नाऽत्र कार्या विचारणा ॥

रविचन्द्रकुजा जीवमन्दचन्द्रसुता यदि ॥ ८० ॥

समाश्रिता ह्येकराशिं तदा पृथ्वी भयाकुला ॥

सर्जां नाशो व्याधिभयं प्रजानां संक्षया भवेत् ॥ ८१ ॥

और उत्तर दिशामें किसी राजाका छत्रभंग हो जो सूर्य, चन्द्र, मंगल, गुरु, शनि, बुध ॥ ८० ॥ एक राशिपर स्थित हों तो पृथिवीपर भय हो, और राजाओंका नाश, रोग भय व प्रजाका क्षय होवे ॥ ८१ ॥

कुजार्कजीवशुक्राश्च यदैकत्र समाश्रिताः ॥

भयं व्याधिं प्रकुर्वन्ति सर्वधान्यमहघंता ॥ ८२ ॥

जो मंगल, सूर्य, गुरु, शुक एकराशिपर स्थित हों तो भय और व्याधिको करें व सम्पूर्ण अन्न महंगे होवें ॥ ८२ ॥

कुजार्केंद्रुज्जजीवाश्च सिंहराशि समाश्रिताः ॥

छत्रभंगः प्रजानाशो भयभाता च मेदिनी ॥ ८३ ॥

मंगल, सूर्य, चंद्र, बुध, गुरु ये ५ ग्रह सिंहराशिपर स्थित हों तो राजाका छत्रभंग, प्रजाका नाश हो और पृथिवी भयसे पीडित होवे ॥ ८३ ॥

एकराशिं गता ह्येते सौम्यशुक्रादिनाधिपाः ॥

सर्वधान्यमहर्घत्वं मेघाः स्वल्पजलप्रदाः ॥

एकनक्षत्रगा ह्येते तदा भयविवर्द्धनाः ॥ ८४ ॥

एकराशिपर बुध, शुक, सूर्य ये ग्रह होवें तो सब अन्न महंगे हों और वृष्टि थोड़ी होवे, यदि एक नक्षत्रपर यह ग्रह हों तो भय अधिक बढ़े ॥ ८४ ॥

बदा जीवयुतो मन्दो जीवाद्वा सप्तमं स्थितः ॥



( २८ )

मयूरचित्रकम्

तदा प्रजा विनश्यन्ति भूयश्चान्नपरिक्षयः ॥ ८५ ॥

जो बृहस्पति शनि एकराशिपर हों अथवा बृहस्पतिसे सप्तम शनि हो तो प्रजाका विनाश और अन्नका नाश होवे ॥ ८५ ॥

कर्कमीनमृगस्त्रीषु शनिभौमौ यदा स्थितौ ॥

तदा युद्धाकुला पृथ्वी धनधान्यविवर्जिता ॥ ८६ ॥

जो कर्क, मीन, मकर, कन्या इन राशियोंपर शनि और मंगल होवे तो पृथिवीपर युद्ध बहुत होवे और प्रजा धनधान्यसे रहित होवे ॥ ८६ ॥

मिथुनस्त्रीधनुर्मीनराशौ मन्दो यदा भवेत् ॥

तदा भूपा विनश्यन्ति पृथ्वी शोणितपूरिता ॥ ८७ ॥

जो शनैश्वर मिथुन, कन्या, धन, मीन इन राशियोंपर हो तो राजाओंका विनाश हो और पृथिवी रुधिरसे पूरित होवे ॥ ८७ ॥

रविशुक्रसुराचार्या यदेकत्र समाश्रिताः ॥

राजभ्रंशः प्रजानाशः सर्वसस्यमहर्षता ॥ ८८ ॥

सूर्य, शुक्र, गुरु यह ग्रह जो एकराशिपर होवें तो राज्यका बिगाड, प्रजाका नाश और सब तृणसंज्ञक धान्य महंगा होवे ॥ ८८ ॥

रविभागवभोमाश्च राशिमेकं समाश्रिताः ॥

घृततेलमसूरात्रं महर्षति महाभयम् ॥ ८९ ॥

सूर्य, शुक्र, मंगल यह एकराशिपर होवें तो घी, तेल, मसूर यह अन्न महंगे हों और महाभय होवे ॥ ८९ ॥

सुरेज्यकविमन्दाश्च राहुरेकत्र संस्थिताः ॥

मेघा जलं प्रमुंचन्ति सर्वधान्यमहर्षता ॥ ९० ॥

गुरु, शुक्र, शनि, राहु यह चारों ग्रह एकराशिपर स्थित हों तो वृष्टि बहुत होवे तोभी सब अन्न महंगे होवें ॥ ९० ॥

रविज्ञगुरुमन्दाश्च राहुयुक्ता यदा स्थिताः ॥

सुभिक्षं क्षेममारोग्यं तस्मिन्काले न संशयः ॥ ९१ ॥

सूर्य, बुध, गुरु, शनि और राहु यह ग्रह जो एकराशिपर हों तो उस समयमें अन्न सरता हो, और प्रजामें क्षेम तथा आरोग्यता होवे ॥ ९१ ॥

एकराशिं गता ह्येते भौमभार्गवसूर्यजाः ॥

तदा भूषा विनश्यन्ति प्रजानां संक्षयो भवेत् ॥ ९२ ॥

जो मंगल, शुक, शनि यह एकराशिपर स्थित हों ते  
राजाओंका नाश और प्रजाका क्षय होवे ॥ ९२ ॥

शुक्रमन्दारजीवाश्च यदेकत्र समाश्रिताः ॥

मेघा जलं न मुंचन्ति दुर्भिक्षं जायते तदा ॥ ९३ ॥

शुक, शनि, मंगल, गुरु, यह ४ ग्रह जो एकराशिपर  
स्थित हों तो वर्षा नहीं होवे और दुर्भिक्ष हो अर्थात्  
अकाल पड़े ॥ ९३ ॥

बृहस्पति, सूर्य, शुक्र, शनि यह जो मंगलके एक राशिपर स्थित हों तो राजाओंको पीडा, अन्न महंगा होवे और लोकमें कोलाहल होवे जिससे प्रजा व्याकुल होवे ॥ ९८ ॥

शनिराहू यदैकत्र भवेतां सहितौ यदा ॥  
सर्वधान्यमहघेत्वं राजानो भयविह्वलाः ॥ ९९ ॥

जो शनि, राहु एक राशिपर हों तो सब अन्न महंगा हों और राजाओंको भयसे व्याकुलता हो ॥ ९९ ॥

एकराशिगतावेतौ धरापुत्रांगिरासुतौ ॥  
तदा मेघा न वर्षन्ति वर्षाकाले न संशयः ॥ १०० ॥

मंगल गुरु यह दोनों ग्रह एकराशिपर स्थित हों तो वर्षासमयमें मेघ नहीं वर्षा करें इसमें सन्देह नहीं ॥ १०० ॥  
महीसुतो दैत्यपुरोहितो गुरुर्यदैकनक्षत्रसमा-  
श्रिता ग्रहाः ॥ तदा सुभिक्षं च यवान्नसंग्रहे  
मासे चतुर्थे विपुलो हि लाभः ॥ १ ॥

जो मंगल, शुक्र, बृहस्पति यह तीनों ग्रह एक नक्षत्रपर

स्थित हों तो सुभिक्ष ( सस्ता ) हो और जब अन्नसंग्रह करनेसे चौथे महीनेमें बहुतही लाभ होवै ॥ १ ॥

सप्त ग्रहा यदैकस्था गोलयोगस्तदा भवेत् ॥

दुर्भिक्षं राष्ट्रपीडा च तस्मिन् योगे न संशयः ॥ २ ॥

जो सात ग्रह एक राशिपर स्थित होवें तो गोलयोग होता है, इस योगसे निस्तन्देह देशमें दुर्भिक्ष और राज-पीडा तथा प्रजामें क्लेश होवै ॥ २ ॥

अग्रे याति दिवानाथः पृष्ठे च भृगुनन्दनः ॥

मध्ये सोमसुतो याति भवत्यन्नमहर्घता ॥ ३ ॥

आगेकी राशिपर सूर्य और पीछेकी राशिपर शुक्र होवै और दोनोंके मध्यमें बुध होवै तो अन्नका भाव तेज हो जाता है ॥ ३ ॥

गच्छतोऽग्रे शुक्रशनी बुधः पृष्ठं समाश्रितः ॥

अध्वान्याकुला पृथ्वी प्रजा नन्दन्ति सर्वशः ॥ ४ ॥

आगे शुक्र, शनि हो और बुध इन दोनोंसे पीछे राशिपर स्थित हो तो पृथिवी धन और धान्यसे परिपूर्ण

होवै और प्रजा सब प्रकारसे सुखी होवै ॥ ४ ॥

भौमस्य पृष्ठतो याति भानुश्चेज्जलशोपकः ॥

भवत्यत्र न संदेहो विपरीतो जलप्रदः ॥ ५ ॥

जो मंगलके पीछेकी राशि वा अंशपर सूर्य होय तो जल सुख जावै अर्थात् वर्षा नहीं हो, इससे विपरीत अर्थात् सूर्यके पीछे मंगल हो तो वर्षा होवै इसमें सन्देह नहीं ॥ ५ ॥

मेघे समाश्रितो भानुर्वृषे च धरणीसुतः ॥

भयव्याधियुता लोका नृपाणां विग्रहो महान् ॥ ६ ॥

मेषराशिका सूर्य और वृषराशिका मंगल होवै तो लोकमें प्रजा भय और रोगसे युक्त होवै, तथा राजाओंमें बहुत विग्रह ( बिगाड ) होवै ॥ ६ ॥

वृषराशिं यदा प्राप्ताः शनिभार्गवभूमिजाः ॥

दुर्भिक्षं राष्ट्रभंगं च लोकानां भयमादिशेत् ॥ ७ ॥

जो वृषराशिपर शनि, शुक, मंगल यह ३ ग्रह होवै तो दुर्भिक्ष हो और राज्यभंग तथा लोकोंमें भय होवे ॥ ७ ॥

मेघे शनैश्चरो भानुर्भागवो भूमिजस्तथा ॥

दुर्भिक्षं लोकपीडा च भवेत्पृथ्वी भयाकुला ॥ ८ ॥

मेघपर शनैश्चर, सूर्य, शुक्र, मंगल यह ग्रह होवें तो दुर्भिक्ष ( तेजी ) और लोकमें पीडा, तथा पृथ्वीपर भय होवे ॥ ८ ॥

वृषे भानुः कुजः शौरिस्तदा युद्धं समादिशेत् ॥

न वर्षन्ति जलं मेघा दुर्भिक्षं लोकपीडनम् ॥ ९ ॥

जो वृषराशिपर सूर्य, मंगल, शनि हों तो राजाओंमें युद्ध हो, मेघ जल नहीं वर्षे, और दुर्भिक्ष तथा लोकमें पीडा हो ॥ ९ ॥

मीनराशिगते मन्दे कर्कटस्थे बृहस्पतौ ॥

तुलाराशिगते भौमे तदा दुर्भिक्षमादिशेत् ॥ ११० ॥

मीनराशिपर शनि, कर्कटके बृहस्पति, तुलाराशिपर मंगल हो तो दुर्भिक्ष हो अर्थात् अकाल पड़े ॥ ११० ॥

शुक्रार्किभूमिपुत्रा हि तुलाराशिं समाश्रिताः ॥

तदा युद्धं महाघोरं राक्षां चैव परस्परम् ॥ ११ ॥

शुक्र, शनि, मंगल यह तीनों ग्रह तुलाराशिके हों तो राजाओंमें परस्पर महायुद्ध भयका देनेवाला होवै ॥ ११ ॥

चन्द्रभागवधरासुता यदा मीनराशिमुपयांति वै तदा ॥ दुर्लभं भवति सर्वधान्यकं वारि-  
दश्च न जलं प्रमुंचति ॥ १२ ॥

चंद्रमा, शुक्र, मंगल यह ग्रह जो मीनराशिपर हों तो सब अन्न महंगा हो जाय और भेघोंसे जल नहीं वर्धे ॥ १२ ॥

गुरुयुक्तः शनिर्वक्रं करोति च यदा तदा ॥  
नवमे मासि गोधूमतिलतैलमहर्षता ॥ १३ ॥

जब बृहस्पतिसे युक्त शनैश्वर वक्री होय तब नववें मासमें गेहूँ, तिल, तेल यह महंगे हो जावें ॥ १३ ॥

गुरुशुक्रावेकराशिं गतौ दुर्भिक्षदुःखदौ ॥  
युद्धदौ शनिमाहेयौ तदा दुर्भिक्षकारकौ ॥ १४ ॥

बृहस्पति, शुक्र यह दोनों जो एक राशिपर हों तो दुर्भिक्षसे पीडा हो और दुःख हो, शनि, मंगल यह एक राशिपर हों तो युद्ध तथा दुर्भिक्ष ( तेजी ) होवै ॥ १४ ॥



यदा शुभग्रहः कश्चिदतिचारं करोति च ॥

तदा नृपाः क्षयं यान्ति दुर्भिक्षं तत्र दारुणम् ॥ १५ ॥

जो कोई शुभग्रह अतिचारगत होवे तो राजाओंका नाश और दारुण दुर्भिक्ष हो अर्थात् महाकाल पड़े ॥ १५ ॥

अतिचारं यदा क्रूरो ग्रहः कश्चित्करोति च ॥

तदा नन्दन्ति राजानो धनधान्याकुला धरा ॥ १६ ॥

जब कोई क्रूर ग्रह अतिचारी हो तो राजालोग सुखी हों और पृथिवी धनधान्यसे परिपूर्ण होवै ॥ १६ ॥

यदातिचारगो मन्दो वक्रो भूतोंगिरः सुतः ॥

तदा नन्दन्ति राजानो धनधान्याकुला धरा ॥ १७ ॥

जो शनैश्वर अतिचारी हो, बृहस्पति वक्र होवै तो राजालोग सुखी होंवें, और पृथिवी धनधान्यसे पूरित होवै ॥ १७ ॥

यदा क्रूरग्रहो वक्रो शुभश्चैवातिचारगः ॥

तदा भवति दुर्भिक्षं राज्ञां युद्धं परस्परम् ॥ १८ ॥

( ३८ )

मयूरचित्रकम्

जब क्रूरग्रह वकी और शुभग्रह अतिचारी हो, तब दुर्मिक्ष ( तेजी ) हो, और राजाओंका परस्पर युद्ध होवै ॥ १८ ॥

यस्मिन्मासे पूर्णिमायां यदा वर्षति वारिदः ॥

गोधूमघृतधान्यानां तस्मिन्मासे महर्घता ॥ १९ ॥

जिस महीनेमें पूर्णिमाके दिन वर्षा होवे तो तिस महीनेमें गेहूँ, धी, अन्न महँगा हो जावै ॥ १९ ॥

यदा मलिम्लुचे मासि भौमो राश्यन्तरे व्रजेत् ॥

गुरुर्वा महती वृष्टिरथ वा लोकसंक्षयः ॥ १२० ॥

जो मलमासमें मंगल वा बृहस्पति दूसरी राशिपर जावै तो वर्षा बहुत होवै अथवा लोकका क्षय होवै ॥ १२० ॥

कार्तिके मार्गशीर्षे च संक्रांतौ वारिवर्षणम् ॥

तदा महर्घता पौषे सस्यबुद्धिश्च मध्यमा ॥ २१ ॥

कार्तिक और मार्गशीर्षमासमें संक्रांतिके दिन जो भेघ वर्ष तो पौषमें अन्न महँगा होवे और सस्य मध्यम होवै ॥ २१ ॥

गुरुशुक्रकेशशिजा यदेकत्र समाश्रिताः ॥

घातयोगं विजानीयात्पांसुवृष्टिस्तदा भवेत् ॥ २२ ॥

बृहस्पति, शुक्र, सूर्य, बुध यह जो एक राशिपर हों तो घात योग जानिये, यह योग होनेसे धूलिकी वर्षा होती है ॥ २२ ॥

सूर्याद्विधुः पंचमसप्तमः स्यात्क्षोणिसुतो याति तंथारिगेहे ॥ दिग्दाहयोगो मुनिना प्रदिष्टः स जात उत्कापतनादिकारी ॥ २३ ॥

सूर्यसे चन्द्रमा पाचवें वा सातवें हो और मंगल छेठ होवें तो यह दिग्दाहयोग उत्कापात मुनियोंने कहाहै २३ उपप्लवात्सप्तमगो महीजो महीसुतात्पंचमगो बुधश्च ॥ बुधाच्च केन्द्रे हिमगो यदा स्यात् भूकंपयोगः कथितो मुनीन्द्रेः ॥ २४ ॥

राहुसे सप्तमस्थानमें मंगल हो और मंगलसे पंचम घरमें बुध हो, बुधसे केन्द्र (१।४।७।१०) स्थानमें चन्द्रमा होवें तो मुनिजनोंने भूकम्प योग कहा है ॥ २४ ॥

अथ संक्रान्तिप्रतिउत्पातफलम् ।

मेपे वृषे कुलीराके यदोत्पाता भवन्ति हि ॥

दक्षिणस्यां तदा युद्धे प्रजा दुर्भिक्षपीडिताः ॥ २५ ॥

मिथुनेऽर्केऽन्ननाशः स्वाद्विध्ये सिंहलके हरो ॥

कान्यकुब्जे महापीडा कन्यकायां स्थिते रवौ ॥ २६ ॥

जो मेप, वृष, कर्कके सूर्यमें उत्पात होवें तो दक्षिण

दिशामें युद्ध होवै और प्रजा दुर्भिक्षसे पीडित होवै ॥ २५ ॥

मिथुनके सूर्यमें उत्पात होनेसे अन्नका नाश हो, विन्ध्याच-

लके मध्यमें और सिंहके सूर्यमें उत्पात हो तो सिंहलदेशमें

अन्नकी हानि हो तथा कन्याके सूर्यमें उत्पात होनेसे

कनौजदेशमें बहुत पीडा होवे ॥ २६ ॥

तौलिन्यके च दुर्भिक्षं देशभंगोथ पिंगले ॥

वृश्चिके च मृगे सूर्ये दुर्भिक्षं नर्मदातटे ॥ २७ ॥

धनुष्यके विनश्यन्ति देशाः कालिंजरादयः ॥

भद्रदेशस्य नाशः स्यात्कुम्भेऽर्के सस्यपीडनम् २८

तुलाके सूर्यमें हो तो दुर्भिक्ष ( तेजी ) हो, भीनमें हो तो

देशभंग हो वृश्चिकके सूर्यमें हो तो और मकरके सूर्यमें हो

तो नर्मदाके निकटदेशोंमें दुर्भिक्ष होवै ॥ २७ ॥ धनुके  
सूर्यमें उत्पात हो तो कालिंजर आदि देश नाश होवै तथा  
कुम्भके सूर्यमें उत्पात हो तो भद्रदेशका नाश हो और  
सस्य ( वृणधान्य ) कमती होवै ॥ २८ ॥

अथ त्रिधा वृष्टियोगः ।

शुक्रस्यास्तमये वृष्टिरिज्ये चोदयमागते ॥

संचरत्यवनीसूनौ मन्दे वृष्टिस्त्रिधा मता ॥ २९ ॥

शुक्रके अस्तमें और बृहस्पतिके उदयमें तथा मंगल  
व शनैश्वरके संचारमें वृष्टि होती है यह तीन प्रकारकी  
वृष्टी कही है ॥ २९ ॥

अथ कर्कमकरसंक्रान्तौ वारफलम् ।

यदा कर्कस्य संक्रान्तिरथ वा मकरस्य सा ॥

भवत्यर्काकिंभौमानां वारे दुःखप्रदा मता ॥ ३० ॥

जो कर्क अथवा मकरकी संक्रान्ति सूर्य, शनि, मंगल  
इन वारोंमें होवै तो प्रजाको दुःख देनेवाली जानना ३०

अथ अगस्त्युदयफलम् ।

दिवोदितो यदागस्त्यस्तदा भयकरः स्मृतः ॥

दुर्भिक्षव्याधिजनको लोकानां नाऽत्र संशयः ॥ ३१ ॥

जो अगस्त्यमुनिका तारा दिनमें उदय होवै तो प्रजाको भयकारी कहा है और लोकमें दुर्भिक्ष ( अकाल ) व रोग उत्पन्न हो इसमें संदेह नहीं ॥ ३१ ॥

अथ तिथिवृद्धिस्तथा क्षयफलम् ।

यदा याति वृद्धिं सिताख्यश्च पक्षस्तदा यान्ति वृद्धिं  
नृपा लोकसंघाः ॥ समा सौख्यदा हानिकारी तु  
हीना तथा कृष्णपक्षे फलं व्यत्ययेन ॥ ३२ ॥

जो शुकपक्षमें कोई तिथि बढे तो राजा और प्रजागण वृद्धिको प्राप्त होवै, और समा अर्थात् कोई तिथि घटे न बढे तो सुख होवै, तथा कोई तिथि घटे तो हानिकारी जानना, और कृष्णपक्षमें इससे विपरीत फल जानना ३२ ॥

अथ त्रयोदशदिनपक्षफलम् ।

यदा च जायते पक्षस्त्रयोदशदिनात्मकः ॥

भवेन्नोकक्षयो घोरो मुण्डमालायुता मही ॥ ३३ ॥

जो तेरह दिनका पक्ष होवै तो लोकका नाश हो और  
पृथिवीपर युद्ध होनेसे रूढमुंडोंसे युक्त पृथिवी होवै ॥ ३३ ॥

अथ चैत्रादिमासेषु तिथ्यादियोगफलम् ।

तत्रादौ चैत्रमासफलम् ।

अथान्यत्संप्रवक्ष्यामि फलं योगसमुद्भवम् ॥

मासवारतिथीनां च सम्यक् ज्ञानप्रकाशनम् ॥ ३४ ॥

अब आगे अन्यप्रकारसे मास, वार, तिथियोंके योगसे  
उत्पन्न जो फल, जिससे सब हाल जाना जाता है सो  
कहता हूँ ॥ ३४ ॥

प्रतिपदि रविवारश्चैत्रमासे यदि स्यान्न भवति  
बहुवृष्टिर्दुःखिता लोकसंघाः ॥ अमृतकिरण-  
वारे ज्ञास्फुजिद्वाक्पतीनां भवति ननु धरित्री  
सस्यतोयाभिपूर्णा ॥ ३५ ॥

( ४४ ) मयूरचित्रकम् ।

जो चैत्रमासके शुक्लपक्षकी प्रतिपदाके दिन रविवार होवै तो वृष्टि बहुत नहीं होवै और प्रजालोग दुखी होवै, तथा चन्द्र, बुध, गुरु, शुक यह वार हों तो निश्चय सम्पूर्ण पृथ्वी तृण, अन्न, जलसे परिपूर्ण होवै ॥ ३५ ॥

वारः स्यान्मन्दकुजयोस्तदा वृष्टिर्न जायते ॥

सस्यानि न प्ररोहन्ति विग्रहं यान्ति भूमिपाः ॥ ३६ ॥

शनि, मंगल वार होवै तो वर्षा नहीं होवै और तृण-धान्य नहीं उत्पन्न हो, तथा राजाओंमें विग्रह होवै ॥ ३६ ॥

चैत्रस्य कृष्णपक्षे वा पंचम्यां बुधवासरे ॥

भोमो वक्रगतिर्याति घृततेलमहर्घता ॥ ३७ ॥

शाल्यन्नं चैव गोधूमास्तदा यान्ति महर्घताम् ३८ ॥

चैत्रमासके कृष्णपक्षमें पंचमी बुधवारको जो मंगल वक्रा होवै तो घी और तेल महंगा हो जावे ॥ ३७ ॥

और चावल तथा गेहूँ महंगे होवें ॥ ३८ ॥

गुरुशुक्रौ यदेकत्र चैत्रमासे व्यवस्थितौ ॥ ३९ ॥

तेलाज्यतिलसूत्राणां संग्रहे च कृते सति ॥



मासद्वये व्यतीते तु विक्रये लाभमादिशेत् ॥ १४० ॥

जो चैत्रमासमें बृहस्पति, शुक्र एक राशिपर होवे ॥ ३९ ॥ तो तेल, घी, तिल, सूत्र इन वस्तुओंके संग्रह करनेसे दो महीने उपरान्त बेचनेमें बहुत लाभ होवे ॥ १४० ॥

चैत्रमासस्य शुक्लायां पंचम्यां यदि वर्षणम् ॥

वर्षाकाले तदा मेघा न वर्षन्ति जलं बहु ॥ ४१ ॥

चैत्रमासके शुक्लपक्षमें पंचमीके दिन जो बृष्टि होवे तो वर्षासमयमें जल बहुत नहीं वर्षे ॥ ४१ ॥

मधुमासे कृष्णपक्षे तिथिवृद्धिर्यदा भवेत् ॥

शुक्लपक्षस्य हानिः स्यादन्नहीना तदा मही ॥ ४२ ॥

चैत्रमासके कृष्णपक्षमें जो तिथिवृद्धि होय, और शुक्लपक्षमें तिथिहानि हो तो पृथिवी अन्नसे हीन होवे ॥ ४२ ॥

चैत्रमासेऽर्कसंक्रान्तौ यदि वर्षति वासवः ॥

वैशाखे मासि वा ज्येष्ठे तदा सस्यमहर्षता ॥ ४३ ॥

चैत्रमासमें संक्रांतिके दिन जो भेष वर्षे तो वैशाख वा

( ४६ ) मयूरचित्रकम् ।

ज्येष्ठमासमें सस्य ( तृणधान्य ) महुँगा हो जावे ॥ ४३ ॥

चैत्रमासस्य शुक्रायां सप्तम्यां दृश्यते घनः ॥

उद्धता वांति वाता वै अथवा निर्मला दिशः ॥ ४४ ॥

तदा संग्रहणं कार्यं गोधूमस्य विपश्चिता ॥

विक्रीते श्रावणे मासे लाभश्च त्रिगुणो भवेत् ॥ ४५ ॥

पंचम्यामपि योगोयं चिन्तनीयो विचक्षणैः ॥

वर्षणं च त्रयोदश्यां तदा दुर्भिक्षतो भयम् ॥ ४६ ॥

चैत्रमासके शुक्लपक्षमें सप्तमीके दिन जो मेघमंडल होवे

तो वर्षाकालमें पवन बहुत चले, अथवा आकाश निर्मल

हो जावे ॥ ४४ ॥ तब ऐसा योग देख चैत्रहीसे गेहूँका

संग्रह करै फिर सावनमहीनेमें बेचनेसे तिगुना लाभ होवे

॥ ४५ ॥ यह योग पंचमीतिथिमेंभी होनेसे पंडितजन

ऐसाही फल जानै चैत्रशुदी तेरसको जो वर्षा होय तो

दुर्भिक्षसे प्रजामें भयकाल होवै ॥ ४६ ॥

पंचमी रोहिणीयुक्ता सप्तमी रौद्रसंयुता ॥

नवमी पुष्यसंयुक्ता स्वातियुक्ता च पूर्णिमा

भवत्यत्र यदा वृष्टिस्तदा प्रावृष्यवर्षणम् ॥४७॥

जो चैत्रमासके शुक्लपक्षकी पंचमीको जो रोहिणी नक्षत्र होवे, सप्तमीको आर्द्रा, नवमीको पुष्य और पूर्णिमाके दिन स्वाति नक्षत्र होवे । इन दिनोंमें जो वर्षा होवे तो वर्षासमयमें वृष्टि नहीं होवे ॥ ४७ ॥

चैत्रे मासि तृतीयायां पंचम्यां फाल्गुने तथा ॥४८॥  
सप्तम्यां माघमासे च माधवे प्रथमेऽहनि ॥

वाता वान्ति तदा वृष्टिर्वर्षाकाले न संशयः ॥४९॥

चैत्रमासमें तीजके दिन, तथा फाल्गुनमासमें पंचमीके दिन ॥ ४८ ॥ और माघमासमें सप्तमीको, वैशाखमें प्रतिपदाके दिन, इन तिथियोंमें जो वायु चले तो वर्षासमयमें वृष्टि बहुत होवे इसमें संशय नहीं ॥ ४९ ॥

चैत्रे वा श्रावणे मासि यदा पंचारवासराः ॥

राजानश्च क्षयं यान्ति मन्दा दुर्भिक्षकारकाः ॥५०॥

नाशयन्ति प्रजाः शुक्रा रविसौम्या विनाशकाः ॥

चन्द्राः कल्याणजनका गुरवो जलघातकाः ॥ ५१ ॥

( ४८ )

मयूराचित्रकम् ।

चैत्र वा श्रावणमासमें जो पाँच मंगलवार हों तो राजाओंका क्षय होवे, पाँच शनि हों तो दुर्भिक्ष (अकाल) पड़े ॥ १५० ॥ और पाँच शुक्र प्रजाका नाश करते हैं, पाँच सूर्य व बुधभी विनाशकारक हैं, पाँच सोमवार कल्याणकारक हैं, पाँच गुरुवार जलके घातक हैं अर्थात् वृष्टिनाशक जानने यह चैत्रमासका विचार कहा ॥ ५१ ॥

अथ वैशाखमासफलम् ।

माधवस्य सिते पक्षे पंचम्बां शनिवासरे ॥  
भरण्यादिचतुष्केषु हस्ते भौमस्य वासरे ॥ ५२ ॥  
पिप्पलीनारिकेरं च ताम्रं कांस्यं च पूगकम् ॥  
रक्तवस्त्रं च सर्वाणि महर्घान्ति न संशयः ॥ ५३ ॥

वैशाखमासके शुकृपक्षमें पंचमीके दिन वा शनिवारमें भरणी आदि चार नक्षत्र ( भ० रु० रो० मृ० ) हो और मंगलवारमें हस्त नक्षत्र हो ॥ ५२ ॥ तो पीपरी, नारियल, ताम्रा, कांसा, सुपारी, लालवस्त्र यह सब वस्तु महँगी हो जाँवे ॥ ५३ ॥

वैशाखे शुक्लप्रातिपदशमी चाभ्रसंयुता ॥

भवत्यत्र न सन्देहः प्रवृत्तकाले ह्यवर्षणम् ॥ ५४ ॥

वैशाखमें शुक्लपक्षकी प्रातिपदा वा दशमीके दिन जो बागल दीख पड़े तो निःसन्देह वर्षाकालमें वृष्टि नहीं होवे ॥ ५४ ॥

वैशाखे च त्रयोदश्यां यदा भौमाऽर्कवासरो ॥

कृष्णा च शर्करा नागवल्ली दुर्लभतां व्रजेत् ॥

तथा महर्घतां याति सैन्धवं रक्तचन्दनम् ॥ ५५ ॥

वैशाखमासकी त्रयोदशी जो मंगल वा रविवारको हो तो पीपरी, शकर, पान यह तेज हो जावें । तथा सैन्धालवण व लालचन्दन महंगे होवें ॥ ५५ ॥

वैशाखे शुक्लपंचम्यां घनैराच्छादितं नभः ॥ ५६ ॥

गर्जनं वारिवृष्टिर्वा तदा सस्यस्य संग्रहः ॥

कर्तव्यो भाद्रमासे तु विक्रीते लाभमादिशेत् ॥ ५७ ॥

वैशाखमासमें शुक्लपक्षकी पंचमीके दिन जो आकाश भेगोंसे आच्छादित होवे ॥ ५६ ॥ और गरजे अथवा

( ५० ) मयूरचित्रकम् ।

वृष्टि होवै तो सस्य ( तृणधान्य ) संग्रह करे, फिर भाइ-  
भासोंमें बेचनेसे लाभ होवै ॥ ५७ ॥

अथ ज्येष्ठमासफलम् ।

ज्येष्ठकृष्णप्रतिपदि भौमाऽर्कबुधवासराः ॥

यदा भवन्ति लोकानां तदा व्याधिभयं भवेत् ॥ ५८ ॥

जो ज्येष्ठमासके कृष्णपक्षकी प्रतिपदाके दिन मंगल,  
रवि, बुध इन वारोंमेंसे कोई वार होवै तो लोकमें रोग  
भय होवै ॥ ५८ ॥

ज्येष्ठशुक्लप्रतिपदि यदि स्यान्मन्दवासरः ॥

क्षत्रभंगः प्रजापीडा दुर्भिक्षं च तदादिशेत् ॥ ५९ ॥

ज्येष्ठशुदी प्रतिपदाको जो शनिवार हो तो क्षत्रभंग हो,  
प्रजाको पीडा हो और दुर्भिक्ष ( तेजी ) पड़े ॥ ५९ ॥

ज्येष्ठाद्ये बुधवारश्चेद्द्रुपे त्वागामिके भयम् ॥

तत्र चेत् सूर्यवारः स्यात्तदा युद्धाकुला धरा ॥ ६० ॥

जो ज्येष्ठशुक्ल प्रतिपदाको बुधवार होवै तो आगामी

( आगेके ) वर्षमें भय होवै, तहां जो रविवार होवै तो पृ-  
थिवीपर युद्ध होवै ॥ १६० ॥

ज्येष्ठमासे दर्शतिथौ रात्रौ मेघः प्रदृश्यते ॥

दिवसे वाप्यनावृष्टिर्जायते नात्र संशयः ॥ ६१ ॥

जो ज्येष्ठमासकी अमावास्याके दिन रात्रिमें मेघ दीख  
पड़े अथवा दिनमें मेघ दीखै तो वर्षाकालमें वर्षा नहीं होवै  
इसमें सन्देह नहीं जानना ॥ ६१ ॥

ज्येष्ठस्य कृष्ण प्रतिपद्युक्ता स्याद्भानुना यदि ॥

वान्ति वातास्तदोग्रा वे भौमेन व्याधिमादिशेत् ६२

ज्येष्ठमासके कृष्णपक्षकी प्रतिपदाके दिन जो रविवार  
होवै तो प्रबल पवन चले, मंगलवार हो तो रोग होवै ॥ ६२

चन्द्रपुत्रेण दुर्भिक्षं गुरुणा सत्यसम्पदः ॥

भार्गवेण सुवृष्टिः स्याच्छशिनात्राकुला धरा ॥ ६३ ॥

शनिना च प्रजानाश्छत्रभंगो ह्यवर्षणम् ॥

जायते नात्र सन्देहः कर्तव्यो देवचिन्तकैः ॥ ६४ ॥

ज्येष्ठकृष्ण प्रतिपदाको जो बुधवार हो तो दुर्भिक्ष हो

( ५२ )

मयूरचित्रकम् ।

बृहस्पति हो तो तृणधान्य बहुत उपजै, शुक्र हो तो  
अच्छी वर्षा होवे, चंद्रवार हो तो पृथिवीपर अन्न बहुत  
होवे ॥ ६३ ॥ शनिवार हो तो प्रजाका नाश हो तथा  
छत्रभंग और अवर्षण ( वृष्टि नहीं ) होवे, दैवज्ञोंको इसमें  
सन्देह नहीं करना चाहिये ॥ ६४ ॥

ज्येष्ठमासे नवक्षाणि रोद्रादीनि विलोकयेत् ॥

निरभ्रैर्जलसम्पत्तिः साभ्रैर्ज्ञेयमवर्षणम् ॥ ६५ ॥

ज्येष्ठमासमें आर्द्रा आदि नव नक्षत्रोंतक जो आकाश  
निर्मल रहे तो वर्षा बहुत होवे, और बादल होवे तो वृष्टि  
नहीं होवे अर्थात् जिस दिन बादल हो वही नक्षत्र  
नहीं वर्ष ॥ ६५ ॥

ज्येष्ठस्य शुक्लसप्तम्यां श्रूयते घनगर्जितम् ॥

मेघश्छन्ननभो वापि वायुर्वहति दक्षिणः ॥

तिलस्य सङ्ग्रहः कार्यो विक्रीते कार्तिकेधनम् ॥ ६६ ॥

ज्येष्ठशुद्धी सप्तमीको जो मेघ गरजै अथवा मेघ आका-



में आच्छादित रहे, दक्षिणकी पवन चलै तो तिलोका  
संग्रह करके कार्तिकमें बेचनेसे लाभ होवे ॥ ६६ ॥

श्रवणर्क्षे धनिष्ठायां यदा मेघः प्रतिष्ठितः ॥

प्रावृट्काले तदा वृष्टिर्मेघो वृष्टिनिरोधकः ॥ ६७ ॥

ज्येष्ठमें श्रवणनक्षत्र, तथा धनिष्ठानक्षत्रमें जो मेघढंवर  
रहे तो वर्षाकालमें वृष्टि होवे और जो पूर्वोक्त नक्षत्रोंमें  
वर्षा होवे तो वर्षासमयमें अनावृष्टि होवे ॥ ६७ ॥

पूर्णमायाममार्या वा ज्येष्ठे व्योमान्वितं घनैः ॥

दिवा वा यदि वा रात्रौ तदा ज्ञेयमवर्षणम् ॥ ६८ ॥

जो ज्येष्ठमासमें पूर्णमासी वा अमावास्याके दिन आ-  
काशमें बादल रहे दिनमें वा रात्रिमें तो अनावृष्टि  
जानना ॥ ६८ ॥

अथाषाढमासफलम् ।

आषाढमासे सितपंचमीतिथौ रव्यादिवारेषु  
यथाक्रमेण ॥ स्यादल्पवृष्टिर्विपुला च वृष्टि-  
र्युद्धं शुभं क्षेमसुखे च नाशः ॥ ६९ ॥

आषाढमासके शुक्लपक्षकी पंचमीको रविवार आदि वारोंका फल क्रमसे यह है, रविवार हो तो वर्षा थोड़ी हो, चंद्रवार हो तो बहुत वर्षा हो, मंगल हो तो शुद्ध हो, बुध हो तो शुभ है, गुरुवार हो तो क्षेम हो, शुक्रसे सुख, शनिवार होनेसे हानि होवै ॥ ६९ ॥

आषाढ शुक्लपंचम्यां शुभवारे शुभेक्षिते ॥

सम्पूर्णनिखिला धात्री धनधान्याकुला धरा ॥ १७० ॥

आषाढमाससे शुक्लपक्षकी पंचमीके दिन शुभ वार हो और उसपर शुभग्रहकी दृष्टि हो तो सम्पूर्ण पृथिवी धन और धान्यसे परिपूर्ण होवै ॥ १७० ॥

क्रूरग्रहयुते वारे लग्ने क्रूरेक्षिते तथा ॥

दुर्भिक्षं मरणं व्याधिश्चौरबाधा सतां सदा ॥ ७१ ॥

आषाढशुदीपंचमीको जो क्रूर वार हो तथा लग्नपर क्रूर ग्रहकी दृष्टि हो तो दुर्भिक्ष, मरण रोग और सज्जनोंको चोरोंसे भय हो, यहाँ वारप्रवृत्तिसमयकी लग्न लेना ॥ ७१ ॥

आपाठे कृष्णपक्षे चेदष्टम्यां रजनीपातिः ॥

मेघमध्ये च संयाति तदा पृथ्वी जलाकुला ॥ ७२ ॥

आपाठमासकृष्णपक्षकी अष्टमीको जो चन्द्रमा बाद-  
लके बीच आच्छादित रहे तो पृथिवीपर वर्षा बहुत  
होवै ॥ ७२ ॥

तस्यामेव यदा रात्रौ निर्मलः शशिलाञ्छनः ॥

दृश्यते छिद्रसंयुक्तस्तदा वाच्यमवर्षणम् ॥ ७३ ॥

उसी आपाठकृष्णाष्टमीको जो रात्रिमें चंद्रमा निर्मल  
हो और चन्द्रमामें छिद्र दीख पड़े तो वर्षा नहीं होवै ऐसा  
कहना ॥ ७३ ॥

आपाठ्यां पूर्णिमायां च यदा वृष्टिस्तु जायते ॥

मासमेकं महर्घं स्यात्ततः पश्चात्सुभिक्षकृत् ॥ ७४ ॥

आपाठीपूर्णमासीके दिन जो वर्षा होवै तो एक मास-  
तक महँगा होवै, उपरान्त सस्ता भाव होवै ॥ ७४ ॥

आपाठे कृष्णपक्षे तु निरञ्जरे रविमण्डलेः ॥

नच वारि प्रवर्षन्ति प्रावृत्काले तदा घनाः ॥ ७५ ॥

आषाढमासके कृष्णपक्षमें जो सूर्यमण्डल निर्मल रहे और बादल नहीं होवै तो वर्षाऋतुमें मेघ जल धरै ॥ ७५ ॥

आषाढ शुक्लपंचम्यां पश्चिमो यदि मारुतः ॥  
यदि वा दृश्यते चापमेन्द्रं स्याद्धारिवर्षणम् ॥ ७६ ॥  
तदा संग्रहणं कार्यं सस्यानां लाभमिच्छता ॥  
विक्रीते कार्तिके मासि निश्चितं लाभमादिशेत् ७७ ॥

आषाढशुक्लपंचमीके दिन जो पश्चिमकी वायु चलै, अथवा इन्द्रधनुष दीख पड़े और वर्षा होवै ॥ ७६ ॥ तो तु-  
णधान्यका संग्रह लाभकी इच्छासे करै और कार्तिकमा-  
समें बेचनेसे निश्चय लाभ होवै ॥ ७७ ॥

आषाढे स्वातिनक्षत्रे सविद्युदुपवर्षणम् ॥  
तदा स्यादन्ननिष्पत्तिस्तोयपूर्णा वसुन्धरा ॥ ७८ ॥  
आषाढमासमें स्वातिनक्षत्र जिस दिन हो उस दिन बि-  
जली चमकै और वर्षा होवै तो अन्न बहुत उपजै और  
पृथिवी जलसे पूर्ण होवै अर्थात् वृद्धि अच्छी होवै ॥ ७८ ॥

इये वाऽथ मध्याह्ने सन्ध्यायां सूर्यमंडलम् ॥

प्रेषच्छन्नं न शुभदं नवम्यां च शुचौ सिते ॥ ७९ ॥

आषाढमासके शुक्लपक्षकी नवमीको सूर्यके उदयसमय वा मध्याह्नसमय वा संध्यासमयमें सूर्यको भेद आच्छादित करे तो शुभ नहीं होवे, समय अच्छा नहीं होवे ॥ ७९ ॥

अथ आर्द्राप्रवेशफलम् ।

ह्रिवेदाष्टनन्देन्द्र एतत्संख्यासु भास्करः ॥

तिथिष्वार्द्रा यदा याति कष्टदः शेषके शुभः १८० ॥

तृतीया, चतुर्थी, अष्टमी, नवमी, चतुर्दशी इन तिथियोंमें जो आर्द्राका सूर्य होवे तो कष्टदायी जानना शेष-तिथियोंमें शुभ जानना ॥ १८० ॥

रवौ भौमे तथा मन्दे रोद्रभं याति भास्करः ॥

तदा न शुभदः प्रोक्तः शुभदः शेषवासरे ॥ ८१ ॥

रवि, मंगल, शनि इन वारोंमें जो आर्द्रानक्षत्रपर सूर्य हो तो शुभ नहीं जानना, शेष वारोंमें शुभ नहीं कहा है ८१

यमाग्नीशाऽहिमूलेन्द्रपितृवारिभके रविः ॥

( ५८ )

मयूरचित्रकम् ।

यांत्यार्द्रामशुभः प्रोक्तः शेषर्शे शुभदः स्मृतः ॥८२॥

भरणी, कृत्तिका, आर्द्रा, आश्लेषा, ज्येष्ठा, मघा, पूर्वा-  
षाढा इन नक्षत्रोंमें जो आर्द्रा नक्षत्रपर सूर्य प्रवेश होवै तो  
अशुभ कहिये, शेषनक्षत्रोंमें प्रवेश हो तो शुभ देनेवाले  
जानना ॥ ८२ ॥

शूले गण्डे व्यतीपाते व्याघाते परिघे शिवे ॥

वैधृतौ चातिगण्डे च आर्द्रा यात्यशुभो रविः ॥८३॥

शूल, गण्ड, व्यतीपात, व्याघात, परिघ, शिव, वैधृति,  
अतिगण्ड इन योगोंमें आर्द्रापर सूर्यप्रवेश हो तो अशुभ है  
शेषयोगोंमें शुभ जानना ॥ ८३ ॥

आर्द्राप्रवेशे वृष्टिश्चेत्सार्धमासमवर्षणम् ।

निर्मलं वृष्टिभूयः स्यात्सस्यपूर्णा वसुन्धरा ॥ ८४ ॥

आर्द्रानक्षत्रके सूर्यप्रवेश होतेही जो वृष्टि होय तो डेढ़  
महीनेतक वर्षा नहीं होवै और जो उस  
निर्मल रहे तो वर्षा बहुत हो और सस्य ( वृणधान्य )  
पृथिवीपर बहुत होवै ॥ ८४ ॥

( ६० )

मयूरचित्रकम् ।

करी तथैव शबली मध्या फले कीर्तिता ॥ ८७ ॥

सन्ध्याकालमें वनमेंसे आये जो पशु उनमें प्रथम काले रंगका पशु अथवा वृष ( बैल नगरमें प्रवेश करे तो पूर्ण वर्षा हो, और काली गौ प्रवेश करे तो प्राणियोंको सुख हो, श्वेत गौ प्रवेश करे तो वर्षाका नाश हो, कपिला गौ प्रवेश करे तो पवन बहुत चले, रक्त श्वेत वर्णकी गौ जो प्रवेश करे तो सस्य ( खरीफ ) का नाश करे, चितकबरी गौ प्रवेश करे तो मध्यम फल जानना ॥ ८७ ॥

रोहिण्यर्क्षे यदापाठे विद्युद्गारिप्रवर्षणम् ॥

रोचितं च घनैर्व्याम तदा सर्वं शुभं भवेत् ॥ ८८ ॥

जो आषाढमासमें रोहिणीनक्षत्रके दिन जो बिजली चमके जल वरषे अथवा आकाश मेघसे रहित हो तो सब ऋतुओंमें शुभ फल होवे है ॥ ८८ ॥

न तत्र वारिपतनं न च पूर्वोत्तरानिलौ ॥

तदा कालोऽतिघोरः स्यात्प्राणिनां नाऽत्र संशयः ८९

जो रोहिणीनक्षत्रमें वृष्टि नहीं होवे और पूर्व तथा  
तिरकी वायु चलै तो अतिकठिन समय होवे जिसमें  
गणियोंको क्लेश हो इसमें संशय नहीं जानना ॥ ८९ ॥

राजापत्यक्षणे चन्द्रे पूर्वाह्ने वाति मारुतः ॥

शुभदोपि तदा स्याद्वै वृष्टिः श्रावणभाद्रयोः ॥ ९० ॥

आषाढमें रोहिणीनक्षत्र सोमवारको हो और पूर्वाह्न-  
समय चलै तो समय अच्छा होवै श्रावण भाद्रमासमें वर्षा  
बहुत होवै ॥ ९० ॥

अहस्तु पश्चिमे भागे पश्चिमो द्रो प्रवर्षतः ॥

मध्याह्ने वाति वायुश्चेन्मन्यो मासो जलप्रदो ॥ ९१ ॥

रोहिणीनक्षत्रके दिन दिनके पिछले ग्रहरोंमें वर्षा हो  
और मध्याह्नमें जो पवन चलै तो श्रावण भाद्रमासमें वृष्टि  
अच्छी होवै ॥ ९१ ॥

श्रमस्तं दिवसं वाति यदा वायुः शुभप्रदः ॥

श्रावणादिषु मासेषु तदा सम्पत्तिरुत्तमा ॥ ९२ ॥

जो उस दिन समस्त दिन पवन चलै तो समय अच्छा हो



( ६२ )

मयूरचित्रकम् ।

और श्रावणादि महर्निर्गो उत्तम संपत्ति होवे ॥ ९२ ॥

वाति चेदशुभो वायुर्व्यत्ययेन फलं वदेत् ॥

तत्र यो बलवान्वायुस्तस्मात् ज्ञेयं शुभाशुभम् ९३ ॥

तथा जो अशुभ पवन चलै तो विपरीत फल जानना,  
तहां जो अनेक और बलवान् पवन चलै उसीके अनुसार  
शुभाशुभ फल जानना ॥ ९३ ॥

प्रजेशनक्षत्रगते सुधानिधौ शुभास्तु वाता

गगनं च निर्मलम् ॥ मृगाः स्वगाः शान्तादि-

गानना यदा नन्दन्ति लोकाः सुखिनस्तदा

भृशम् ॥ ९४ ॥

रोहिणीनक्षत्र चंद्रवारके दिन शुभ वायु चलै और  
आकाश निर्मल रहे तथा पशु, पक्षी शांत दिशाको मुख  
करै तो लोकमें आनंद और सुखकी वृद्धि हो ॥ ९४ ॥

दक्षिणेन यदा याति रोहिण्यां रोहिणीपतिः ॥

दूरस्थो निकटस्थो वा जगत्कष्टप्रदायकः ॥ ९५ ॥

उत्तरस्यां यदा याति रोहिण्यां रोहिणीपतिः ॥

सोपसर्गात्तदा वृष्टिरस्पृशन् सुस्तिनो जनाः ॥ ९६ ॥

रोहिणीनक्षत्रके दिन जो चन्द्रमा रोहिणीके दहिनी ओर दूर वा निकट स्थित हो तो संसारको कष्टदायक जानना ॥ ९५ ॥ और जो उत्तर ओर समीप विचरै अरु रोहिणीको स्पर्श नहीं करै तो लोकमें मनुष्य सुखी रहें ॥ ९६ ॥

रोहिणीशकटमध्यगः शशी शोकरोगभयदुः

खदः स्मृतः ॥ शीतरश्मिमनुयाति रोहिणी

कामिनो हि वशागास्तदांगनाः ॥ ९७ ॥

शकट ( गाडी ) के आकार जो रोहिणी तिसके मध्य जो चंद्रमा गमन करै तो शोक, रोग, भय, दुःख देनेवाला कहिये और जो चंद्रमाके पीछे रोहिणी होवे तो स्त्रियां कामीजन्मके वशमें होवें ॥ ९७ ॥

रोहिण्याः पृष्ठतो याति यदा कुम्भदिनीपतिः ॥

कामिनीनां वशं याति नराः कामप्रपीडिताः ॥ ९८ ॥

जो रोहिणीनक्षत्रके पीछे चन्द्रमा हो तो कामसे पीडित

मनुष्य कामिनियों ( स्त्रियों ) के वशमें हो जावें ॥ ९८ ॥  
 बह्नेर्दिशि भयमतुलं नैर्ऋत्यां दुःखसंयुतां लोकाः ॥  
 ईशानस्थे चन्द्रे सुखबाहुल्यं च मध्यमं वाते ॥ ९९ ॥

जो रोहिणीसे अग्निकोणमें चंद्रमा हो तो भय बहुत होवे, नैर्ऋत्यमें हो तो लोकमें दुःख होवे, ईशानमें हो तो सुख बहुत होवे वायव्यदिशामें चन्द्रमा हो तो मध्यम फल जानना ॥ ९९ ॥

धरणीसुतो मन्दरहितः कांतियुतश्चन्द्रमा वि-  
 नोत्पातः ॥ शुभदश्च सर्वजगतो यदि सूर्य-  
 स्तक्षिणरश्मिः स्यात् ॥ २०० ॥ यत्फलं रो-  
 हिणीयोगे तत्स्वात्यामपि चिंतयेत् ॥ नारा-  
 यणेन लिखितं वराहेण च भाषितम् ॥ २०१ ॥

रोहिणीनक्षत्रके दिन जो मंगल और शनिवारसे रहित  
 विना उत्पातके निर्मल रहे और दिनमें सूर्य प्रचंड तपै तो  
 सब जगत्को शुभदायक होवे है ॥ २०० ॥ जो फल  
 रोहिणीके योगका कहा वह स्वातिनक्षत्रके दिनभी विचा-

भाषाटीकासहितम् । ( ६५ )

ना ऐसा बराहामिहिराचार्यजीने वर्णन किया और नारायणप्रसादने लिखा ॥ १ ॥

अथ स्वातिनक्षत्रविचारः ।

सप्तम्यां माघमासे यदि पतति हिमं स्वाति-  
नक्षत्रयोगे चन्द्रार्को रश्मिर्हीनो जलधरस-  
हितो वाति वातः प्रचण्डः ॥ विद्युद्युक्तं नभो  
वा यदि भवति तदा सर्वसस्यैरुपेता पृथ्वी  
स्याद्वारिपूर्णा मुदितजनपदा हृष्टलोकैश्च यु-  
क्ता ॥ २ ॥ श्रावणे फाल्गुने मासे चैत्रवे-  
शाखयोरपि ॥ आपादे स्वातियोगोऽयं  
विचार्यो देवाचिन्तकैः ॥ ३ ॥

माघवदी सप्तमीको स्वातिनक्षत्रमें जो हिम ( पाला )  
पड़े, बादल होवे और चन्द्रमा सूर्य कुहरसे ढक जायें,  
पवन प्रचंड चले, वा बिजली चमकै, सजल मेघ होवें तो  
पृथ्वीपर सब धान्य उपजै वर्षा बहुत अच्छी होवे और  
मनुष्यजन लोकमें आनन्दपूर्वक सुखी होवे ॥ २ ॥

यह विचार श्रावण, फाल्गुन, चैत्र, वैशाखमें ही तथा आपादमासमें यह स्वातियोग दैवज्ञपंडितों करके विचारना चाहिये ॥ ३ ॥

अथ भेवलक्षणम् ।

ओतुप्रेतश्चादिकाकाऽनुरूपाच्छिन्ना भिन्ना  
वाग्निहीनातिरूक्षाः ॥ उष्ट्राकारा वानराका-  
रदेहा मेघाः प्रोक्ताः दुःखदा वै प्रजानाम्  
॥ ४ ॥ मंजिष्ठा शुक्लकौशेयस्वर्णकौचस-  
मप्रभाः ॥ अच्छिन्नमूलाः सुस्निग्धाः शुभदाः  
सजला घनाः ॥ ५ ॥

अब मेघोंका लक्षण कहते हैं । आपादमासमें जो बादल बिलाव, प्रेत, कुत्ता और कौआ इनके आकार छिन्न भिन्न विना बिजलीके रुखे आवे अथवा ऊँट तथा वानरकी देहके आकार होवे तो ऐसे लक्षणवाले मेघ प्रजाको दुःख देनेवाले कहे हैं ॥ ४ ॥ तथा मंजीठ, सपेद रेशमी, सुवर्ण, कौच पक्षी इनके समान कांतिवाले हों और नहीं कटी है मूल ( जड़ ) जिनकी ऐसे विचित्ररंगके सुन्दर चि-

कने जल भरे हुये बादल हों तो शुभ देनेवाले होते हैं ॥ ५ ॥

शाक्रोद्भूतेमोरुतेर्वारिवृष्टिः पृथ्वी सस्यव्या-  
वृत्तानन्दयुक्ताः ॥ वह्न्युद्भूतेर्वह्निकोपोऽत्र

नाशो याम्येरन्नं क्षीयते राक्षसोत्पेः ॥ ६ ॥

पञ्चाजातेर्वारिवृष्टिः समग्रा वातोद्भूतेर्वातयु-  
क्ता हि वृष्टिः ॥ वृष्टिः सस्यं सौम्यकाष्ठासंमु-  
त्थेरीशोद्भूतेर्वातिशोका जनाः स्युः ॥ ७ ॥

जो आपादमासमें पूर्ववायु चले और वर्षा होवे तो  
पृथिवीपर सस्य बहुत उपजै और प्रजा आनन्दयुक्त होवे ।

अग्निकोणकी पवन चले तो अग्निका कोप हो, दक्षिण  
तथा नैर्ऋत्यकी चले तो अग्निका नाश होवे ॥ ६ ॥

पश्चिमकी पवन चले तो वर्षा अच्छी होवे, वायव्यकी  
पवन चले तो वायुसहित वर्षा होवे, उत्तरकी पवन चले  
तो वृष्टि बहुत हो, सस्य ( खरीफ ) अच्छी होवे, ईशान-  
की वायु चले तो मनुष्योंका शोक दूर होवे ॥ ७ ॥

उल्कानिघातभूकम्पादिग्दाहाशनिविद्युतः ॥

( ६८ )      मधूरचित्रकम् ।

नादा मृगाणां संग्राह्यास्तथेवाम्बुधरास्तदा ॥ ८ ॥

उल्कापात, वज्रका शब्द, भूकंप ( भूचाल ), दिग्दाह,  
गर्जना, बिजली, मृगोंका शब्द तथा मेघोंका स्वरूप  
इनका विचार करै ॥ ८ ॥

अथापादपूर्णमायां पवनपरीक्षा ।

आपादमासस्य च पूर्णिमायां सूर्यास्तकाले  
यदि वाति वातः ॥ पूर्वस्तदा सस्ययुता ध-  
रित्री नन्दन्ति लोकाः सजला घनाः स्युः ॥

॥ ९ ॥ कृशानुवाते मरणं प्रजानामन्न-  
स्य नाशः खलु वृष्टिनाशः ॥ याम्ये मही  
सस्यविवर्जिता स्यात् परस्परं यान्ति नृपा  
विनाशम् ॥ २१० ॥

। आपादमासकी पूर्णिमाके दिन सूर्यास्तसमयमें जो  
पूर्वकी पवन चलै तो पृथिवीपर तृण बहुत उपजै लोकमें  
आनन्द होवे, वर्षा अच्छी हो ॥ ९ ॥ अग्निदिशाकी  
पवन चलै तो प्रजाका मरण, अन्नका नाश व वर्षाका

विनाश होवे, दक्षिणकी वायु बहे तो पृथिवीपर तृण नहीं  
उपजै और राजालोग परस्पर युद्ध करके नाशको प्राप्त  
होवे ॥ २१० ॥

नेशाचरो वाति यदात्र वातो न वारिदो वर्ष-  
ति भूरि वारि ॥ प्रत्यक्समीरे सुखिनो मनु-  
ष्या जलान्नपूर्णा च वसुंधरा स्यात् ॥ ११ ॥

वायव्यवाते जलदागमे स्यादभ्रस्य नाशः प-  
वनेः प्रचंडेः ॥ सौम्येऽनिले धान्यजलाकुला

धरा नन्दन्ति लोका भयदुःखवर्जिताः ॥ १२ ॥

। जो नैर्ऋत्यकी वायु बहे तो बहुत जल नहीं वर्ष,  
पश्चिमकी पवन चले तो मनुष्य सुखी होंवें और पृथिवी  
जल भन्नेसे पूर्ण होवे ॥ ११ ॥ वायव्यकी वायु बहे  
तो मेघोंके आनेसे प्रचल वायु चले जिससे बादल उडजावें,  
उत्तरकी पवन चले तो पृथिवीपर भन्न जल बहुत होवे  
और लोकमें प्रजागण आपन्दयुक्त हो तथा भय और  
दुःखरहित हो जावें ॥ १२ ॥



ऐशोऽन्नवृद्धिर्बहुवारिपूरिता धरा च गावो बहु-  
दुग्धसंयुताः ॥ भवंति वृक्षाः फलपुष्पदायि-  
नो मन्दन्ति भूपाश्च परस्परं तदा ॥ १२ ॥

ईशानकी वायु बहै तो अन्नकी वृद्धि हो और जल बहुत बँधे, गौएं बहुत दूधसे युक्त हों और वृक्षोंमें फल फूल अच्छे हों, तथा उस समयमें राजालोग परस्पर आनन्द करें ॥ १२ ॥

अथ श्रावणमासफलम् ।

श्रावणे शुक्रसप्तम्यां यदि मेघः प्रवर्षति ॥  
तदा प्रजाश्च नन्दन्ति धनधान्याकुला धरा ॥ १४ ॥  
सप्तम्यां श्रावणे मासि स्वातियोगे च वर्षति ॥  
निष्पाप्तिः सर्वसस्यानां भवन्ति सुखिनो जनाः १५

अब श्रावणमासका फल कहते हैं । श्रावणशुदी सप्तमीके दिन जो मेघ वर्षे तो प्रजागण सुखी होवें और पृथिवीपर अन्न धान्य बहुत हो ॥ १४ ॥ तथा श्रावणशुदी सप्तमी-

के दिन स्वातिनक्षत्रमें जो वर्षा हो तो सब तृणधान्य उ-  
पजें और मनुष्य सुखी होंगे ॥ १५ ॥

श्रावणेऽस्तंगते भानौ सतम्यां शुक्लपक्षके ॥

दृश्यते न च पर्जन्यस्तदा मेघो न वर्षति ॥ १६ ॥

चित्रास्वातिविशाखासु यदि मेघो न वर्षति ॥

श्रावणे च तदा पृथ्वी वारिसस्यविवर्जिता ॥ १७ ॥

श्रावणशुद्धी सप्तमीके दिन सूर्यास्तसमय पीछे जो मेघ  
नहीं दीख पड़े तो वर्षा नहीं होवे ॥ १६ ॥ तथा श्रावणमास  
चित्रा, स्वाति, विशाखा इन नक्षत्रोंमें यदि मेघ नहीं वर्षे  
तो पृथिवीपर जल नहीं वर्षे और तृण नहीं उपजै ॥ १७ ॥

श्रावणे कृत्तिकया च यदि मेघः प्रवर्षति ॥

तदा त्वेकार्णवा पृथ्वी धनधान्याकुला प्रजा ॥ १८ ॥

श्रावणस्य सिते पक्षे पूर्वाभाद्रपदासु च ॥

चतुर्थ्या जलपातश्चेत्पृथ्वी स्यादन्नसंकुला ॥ १९ ॥

श्रावणर्क्षे पूर्णिमायां यदि मेघः प्रवर्षति ॥

तस्मिन्काले सुमिक्षं स्यादरित्री चान्नसंकुला ॥ २० ॥

श्रावणमासमें कृत्तिकानक्षत्रके दिन जो मेघ वर्षे तो पृथिवी जलमयी हो जावे और प्रजा धनधान्यसे युक्त होवे ॥ १८ ॥ श्रावणके शुक्लपक्षमें पूर्वाभाद्रपदानक्षत्रमें अथवा चतुर्थीतिथिमें जो जल निरे तो पृथिवीपर अन्न बहुत होवे ॥ १९ ॥ श्रावणीपूर्णमासीको श्रावणनक्षत्रमें जो मेघ वर्षे तो सुभिक्ष ( सस्ता ) होवे और पृथिवीपर अन्न बहुत होवे ॥ २२० ॥ यह श्रावणमासका फल कहा ॥

अथ भाद्रपदमासफलम् ।

नभस्यसप्तमी कृष्णा रोहिणीमन्दसंयुता ॥  
 गुरुशुक्रार्कयुक्ता वा यवगाधूमशालयः ॥ २१ ॥  
 हरिद्रा जीरकं सीसं पारदं द्विगुमेक्षवम् ॥  
 तिलं कस्तूरिका चैव महर्षीति न संशयः ॥  
 गते मासे तृतीये तु विक्रीये लाभमादिशेत् ॥ २२ ॥  
 भाद्रकृष्णसप्तमीको रोहिणी नक्षत्र हो और शनिवार वा गुरु, शुक्र, रवि यह वार हों तो जौ, गेहूं, चावल ॥ २१ ॥ हल्दी, जीरा, सीसा, पारा, हींग, सुहृत्, तिल,

कस्तूरी यह वस्तु महँगी होवे, इसमें सन्देह नहीं । इसका संग्रह करे तीसरे महीनेमें बेचनेसे विशेष लाभ होवे ॥ २२ ॥

नभस्यस्य तृतीयायां प्रहरे च तृतीयके ॥ २३ ॥

उत्तरस्यां घना दृष्टास्तदा स्युः सुखिने जनाः ॥

अन्नसंग्रहणं कार्यं षष्ठे मासि महर्घता ॥ २४ ॥

भाद्रकृष्णतृतीयाको तीसरे प्रहरमें ॥ २३ ॥ जो उत्तरदिशाकी ओर बादल दीप्त पड़े तो मनुष्य सुखी होवे अन्नका संग्रह करे छठे महीनेमें महँगा होवे ॥ २४ ॥

भाद्रे मास्यष्टमी शुक्ल मूलचन्द्रार्कसंयुत ॥

तदा च पंचमे मासि शणसूत्रमर्घता ॥ २५ ॥

यदा भाद्रपदे मासि संक्रान्तौ जलवर्षणम् ॥

तदा भवन्ति रोगाश्च प्राणिनां चाश्विने भयम् ॥ २६ ॥

भाद्रशुदी अष्टमीको मूलनक्षत्र हो और चन्द्रवार अथवा रविवार हो तो पाँचवें महीनेमें सन और सूत महँगा होवे ॥ २५ ॥ जो भाद्रमासमें संक्रांतिके दिन जल

( ७४ ) नयुराधिपक्रम ।

वर्ष तो प्राणियोंको अनेक रोम होवें और आश्विन  
( कुँवार ) के महीनेमें जीवोंको मरण होवै ॥ २६ ॥

अमावास्या भाद्रपदे युक्ता स्याद्भानुना यदि ॥  
तदा मद्धन्ता ज्ञेया सस्यानां देवाचिन्तकैः ॥ २७ ॥

जो भाद्र अमावास्याके दिन रविवार होवै तो तृण  
धान्य महंगा होवै ऐसा दैवज्ञों करके जानना ॥ २७ ॥

अथ आश्विनमासफलम् ।

आश्विनस्य त्रयोदश्यां शनिवारो यदा भवेत् ॥  
यदि संक्रमणं तत्र रवेः सस्याकुला मही ॥ २८ ॥  
आश्विने शानैवक्रं स्याद्बुधो राश्यंतरं व्रजेत् ॥

शुक्रश्चास्तमर्थं याति तदान्नप्लाविता धरा ॥ २९ ॥

जो आश्विनमासमें त्रयोदशीको शनिवार होवै और  
संक्रान्तिभी उस दिन लगे तो पृथिवीपर सस्य बहुत होवै  
॥ २८ ॥ तथा जो आश्विनमासमें शनि वक्रो होवै और  
बुध दूसरी राशिमें जावै, शुक्रका अस्त होवै तो अन्नसे  
पृथिवी पूरित होवै अथवा अन्नादिक बहुत होवै ॥ २९ ॥

शनिराहोश्च तत्रैव संचारो जायते यदि ॥

तेलसूत्रशणादीनां तदा वाच्या महर्घता ॥ २३० ॥

आश्विने शुक्रसप्तम्यामष्टम्यां वारिवर्षणम् ॥

तदा सुभिक्षमाद्देश्यं राजानः शान्तिविग्रहाः ॥ ३१ ॥

आसौजमासमें शनि, राहुकाजी जो संचार हो अर्थात् दूसरी राशिपर जाय तो तेल, सूत, सन यह वस्तु मँहँगी होवें ॥ २३० ॥ आसौजशुदी सप्तमी वा अष्टमीके दिन वर्षा होवै तो सुभिक्ष ( सस्ता ) होवै राजाओंका विग्रह शान्त ( दूर ) होवै ॥ ३१ ॥

यदा चाश्वियुजे मासि दशम्यां प्रतिपत्तिथौ ॥

अष्टम्यामाश्वरेन्मेघः सत्वरं वृष्टिकारकः ॥ ३२ ॥

आदित्यास्तमये मेघाः पर्वताकारसन्निभाः ॥

दृश्यन्ते जलपातः स्यात्तास्मिन्नेव दिने तदा ॥ ३३ ॥

जो आसौजमासमें दशमी, प्रतिपदा, अष्टमीको बादल हो तो शीघ्रही वर्षा होवै ॥ ३२ ॥ जो कुंवारमें सूर्यास्तसमय मेघ पर्वताकार होवै तो उसी दिन वर्षा होवै ॥ ३३ ॥

( ७६ )

मयूराचिह्नकम् ।

अथ कार्तिकमासफलम् ।

कार्तिके मार्गशीर्षे वा संक्रान्तौ वारिवर्षणम् ॥

तदा समयेता पौषे सस्यवृद्धिस्तु मध्यमा ॥ ३४ ॥

कार्तिकस्य त्यमावास्या रविवारेण संयुता ॥

शनिभौमयुता वापि सर्वलोकभयावहा ॥ ३५ ॥

कार्तिक वा मार्गशिरमासमें संक्रान्तिके दिन जो वृष्टि होवे तो पौषमासमें अन्न सस्ता हो और सस्यकी मध्यम वृद्धि होवे ॥ ३४ ॥ कार्तिककी अमवास्याको रविवार हो वा शनि, भौमवार हो तो सब लोकोंमें भय होवे ॥ ३५ ॥

तत्र चेद्रविसंक्रान्तिस्तत्समीपेऽथ वा भवेत् ॥

तदा सुखयुता लोकाः सर्वसस्यमहर्षता ॥ ३६ ॥

यदा कार्तिकमासे तु वारिदस्य च गर्जनम् ॥

भवत्यन्नमहर्षत्वं सस्यसम्पत्तिरुत्तमा ॥ ३७ ॥

तहाँ जो सूर्यकी संक्रांति हो अथवा उस दिनके समीप संक्रांति हो तो लोकमें सब सुखी रहें और सब सस्य ( तृणधान्य ) महँगे हों ॥ ३६ ॥ तथा जो कार्तिकमा-

समें भेदं गरजे तो अन्न महेगा हो और सस्य बहुत उत्तम होवे ॥ ३७ ॥

ऊर्जस्य शुक्लदादश्यां रजनी निर्मला यदि ॥

पूर्णिमा कृत्तिकायुक्ता तदा लोकाः सुखान्विताः ३८

अथ वा भरणी सर्वा कार्तिक्या भवति ध्रुवम् ॥

दुर्भिक्षं जायते घोरं तथा रोगा भवन्ति हि ॥ ३९ ॥

कर्तिकशुक्लदावशीको जो रात्रि निर्मल रहे और पूर्णि-

माके दिन कृत्तिका नक्षत्र हो तो लोकोंमें सुख होवे ॥ ३८ ॥

अथवा पूर्णिमाको भरणी नक्षत्र होवे तो निश्चय दुर्भिक्ष

( अकाल ) घोर हो तथा रोग हों ॥ ३९ ॥

तस्यामेवाश्विनीयोगे सस्यसम्पन्न मध्यमा ॥

यदि चेद्रोहिणीयोगे जन्तवः क्लेशभागिनः ॥ २४० ॥

तथा जो पूर्णमासीको अश्विनी नक्षत्र हो तो सस्य

( तृण ) मध्यम होवे और जो रोहिणी हो तो प्राणि-

योंको क्लेश होवे ॥ २४० ॥

यदा कार्तिकमासे तु ग्रहणं चन्द्रसूर्ययोः ॥



निर्घातो भूमिकंपश्च तारकापतनं तथा ॥ ४१ ॥

उल्कापातो रजःपातो ह्यनभ्रे जलवर्षणम् ॥

एते चान्ये तथोत्पाताः प्रभवन्ति पुरोदिताः ॥ ४२ ॥

संग्रहः सर्वधान्यानां कर्तव्यो धनकांक्षिभिः ॥

विक्रीते पंचमे मासि लाभश्च द्विगुणो भवेत् ॥ ४३ ॥

जो कार्तिकमासमें चन्द्र सूर्य ग्रहण होवै, बिजली गिरै, भूकंप हो तथा तारे टूटें ॥ ४१ ॥ उल्कापात हों, धूल-की वर्षा हो, बिना बादलके वर्षा हो, यह उत्पात हों, इनसे अन्यभी उत्पात हों ॥ ४२ ॥ तो धनलाभकी इच्छावाला मनुष्य सब धान्योंका संग्रह करै पाँचवें महीनेमें बेचनेसे दूना लाभ होवै ॥ ४३ ॥

अथ मार्गशीर्षमासफलम् ।

मार्गशीर्षे चतुर्दश्यां दर्शो वा दृश्यते यदा ॥

घनेराच्छादितो भानुस्तदा सस्यमहर्षता ॥ ४४ ॥

मार्गशुक्लद्वितीयायां शनिवारोऽथ दक्षिणः ॥

वातो वहति लोकानां तदा कष्टप्रदायकः ॥ ४५ ॥

मार्गवदी चतुर्दशी वा अमावास्याके दिन जो बादलोंसे  
ढका भया सूर्य दीख पड़े तो तृण महेगा होवै ॥ ४४ ॥

मार्गशुदीद्वितीया शनिवारको दक्षिणदिशाकी वायु बहे तो  
लोकमें प्राणियोंको कष्ट देनेवाली जानना ॥ ४५ ॥

मार्गशीर्षादिमासेषु शुक्लपक्षे तिथिक्षयः ॥

छत्रभंगं प्रजापीडा दुर्भिक्षं च समादिशेत् ॥ ४६ ॥

मार्गशीर्षे कृष्णपक्षे तिथिवृद्धिश्च जायते ॥

तदा युद्धाकुला पृथ्वी प्रजाः क्रन्दन्ति नित्यशः ४७ ॥

जो मार्गशीर्ष आदि महानोषे शुक्लपक्षमें तिथिक्षय होवै  
तो छत्रभंग प्रजाको पीडा और दुर्भिक्ष ( महेगा ) होवै ॥

॥ ४६ ॥ मार्गशीर्षे कृष्णमें तिथिकी वृद्धि होवै तो

पृथिवीपर युद्ध हो और प्रजा नित्य रुदन करे ॥ ४७ ॥

मार्गशीर्षस्य सप्तम्यां नवम्यामीशादिग्यदि ॥

दृश्यते मेघसंछन्ना स्तोत्रं वर्षति वारिदः ॥ ४८ ॥

मार्गकृष्णचतुर्थ्यां च पितृक्षे मेघदर्शनम् ॥

अथवा जलपातः स्यात्तदाषाढे च वर्षणम् ॥

समर्धता च सस्यानामादेश्या गणकोत्तमैः ॥ ४९ ॥

मार्गशीर्षकी सप्तमी तथा नवमीको जो ईशानदिशामें बादल होवें तो वर्षा थोड़ी होवै ॥ ४८ ॥ मार्गवदीचतुर्थीको और मघानक्षत्रमें जो मेघ दीख पड़ें अथवा जल गिरै तो आषाढमें वर्षा होवै ॥ और तृणधान्य सस्ता होवै ऐसा उत्तम ज्योतिषियोंकरके कहना चाहिये ॥ ४९ ॥

चतुर्थी सार्षपसंयुक्ता पंचमी पितृसंयुक्ता ॥ २५० ॥

षष्ठी च भगसंयुक्ता मार्गे मासि यदा भवेत् ॥

त्रिरात्रं महती वृष्टिराषाढे शुक्लपक्षके ॥ ५१ ॥

मार्गवदी चतुर्थीको आश्लेषा नक्षत्र हो, पंचमीको मघा हो ॥ ५५० ॥ और षष्ठीको पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र हो तो आषाढके शुक्लपक्षमें तीन रात बहुत वर्षा होवै ॥ ५१ ॥

मार्गकृष्णाष्टमी स्वातिचित्रायुक्ता भवेद्यदि ॥

मेघाक्रांतं नभस्तस्यां दृश्यते सर्वदा यदि ॥ ५२ ॥

तस्मिन्नक्षत्रे तदाषाढे जायते वृष्टिरुत्तमा ॥

सर्वसस्ययुता पृथ्वी प्रजा नन्दन्ति नित्यशः ॥ ५३ ॥

जो मार्गशीर्षबदी अष्टमीको स्वाति वा चित्रा नक्षत्र हो  
और सब दिनभर बादल रहें ॥ ५२ ॥ तो आषाढमासमें  
चित्रा स्वाति नक्षत्रके दोनों दिन बहुत वर्षा होवे, पृथिवी-  
पर सस्य सब उत्पन्न हो प्रजामें नित्य आनंद होवे ॥ ५३ ॥

अष्टमी चापि नवमी चित्रयुक्ता यदा भवेत् ॥  
वायुभे च तदापादे मेघा वर्षन्ति नित्यशः ॥ ५४ ॥

मार्गबदी अष्टमी वा नवमीको चित्रा नक्षत्र हो तो  
आषाढमें स्वातिनक्षत्रके दिन बहुत वर्षा होवे ॥ ५४ ॥

अथ पौषमासफलम् ।

पौषस्य च तथा कृष्णा पंचमी भौमसंयुता ॥  
तस्यां मेघाः प्रवर्षन्ति तदा धान्याकुला मही ॥  
अतसीधृतमंगिष्ठा वर्षे यांति महर्चताम् ॥ ५५ ॥

अथ पौषमासका फल कहते हैं, पौषके कृष्णपक्षकी  
पंचमी मंगलके दिन जो मेघ वृष्टि करे तो पृथिवीपर अन्न  
बहुत उपजै। और अशुभ, घी, मँजोठ यह वस्तु उस  
वर्षमें महँगी हो जायें ॥ ५५ ॥

( ८२ )      भयूरचित्रकम् ।

पूर्वाभाद्रपदा पौषे विज्ञेयेण निरीक्षयेत् ॥ ५६ ॥

परिवेपो गर्जनं च विद्युद्धारिप्रवर्षणम् ॥

यदि तत्र प्रजायन्ते तदा वृष्टिरथोत्तमा ॥ ५७ ॥

पौषमासमें पूर्वाभाद्रपदानक्षत्रके दिन सावधानतापूर्वक देखै ॥ ५६ ॥ तहां जो सूर्यचन्द्रमंडलमें परिवेप हो भेद्य गरजै वा बिजली कड़कै तथा जल वर्षे तो वर्षाकालमें वृष्टि उत्तम होवे ॥ ५७ ॥

एक्कादश्यां नवम्यां च पौषमासे घना यदि ॥

पुर्बस्यां दिशि गर्जति तदा सत्यविनाशकः ॥ ५८ ॥

पौषकृष्णस्य सप्तम्यां वारिवाहा महानिधि ॥

यदा वर्षन्ति गर्जन्ति तदा स्याद्वृष्टिरुत्तमा ॥ ५९ ॥

पौषवदी एकादशी और नवमीको जो पूर्वदिशामें भेद्य गरजै तो तृणका विनाशक होवै ॥ ५८ ॥ जो पौषवदी सप्तमीको अर्धरात्रिसमय भेद्य वर्षा करै तथा गरजै तो वर्षासमयमें वृष्टि उत्तम हो ॥ ५९ ॥

पौषस्य यद्यग्रावास्या ज्येष्ठानक्षत्रसंयुता ॥

तदा सस्यमहर्वत्त्वं मूलयुक्ताल्पमूल्यता ॥ २६० ॥

शुक्ला त्रयोदशी पौषे मन्दशुक्रकुजैर्युता ॥

यदि वर्षाति जीमूतः कार्यो गोधूमसंग्रहः ॥ ६१ ॥

जो पौषकी अमावास्याको ज्येष्ठानक्षत्र हो तो तृण धान्य मँहगे हों मूलनक्षत्र हो तो सन्ते होवें ॥ २६० ॥

जो पौषमासकी त्रयोदशीको शनि, शुक्र वा मंगलवार होवै और मेघ वर्षे तो गेहूँका संग्रह करनेसे विशेष लाभ होवै ॥ ६१ ॥

पौषशुक्रचतुर्थ्यां तु विद्युद्वर्षनमुत्तमम् ॥

तदा विद्युद्वनच्छन्नं दृष्टमिन्द्रधनुस्तथा ॥ ६२ ॥

धनुर्विद्युद्वनो वापि यद्येकमपि नो भवेत् ॥

पौषमासे तथा वाच्यं वर्षाकाले ह्यवर्षणम् ॥ ६३ ॥

जो पौषशुद्ध चतुर्थीको बिजली दीख पड़े तो उत्तम फल होवे तथा बिजली तडपै, बादल होवे, इन्द्रधनुष दीख पड़े ॥ ६२ ॥ अथना पौषगामनें पूर्वाभाद्रपदानक्षत्रके दिन बिजली चमके, धनुष उमै तो वर्षाकालमें अवर्षण होवे ॥ ६३ ॥

पौषे मासे शुक्लपक्षे पंचम्यां हिमवर्षणम् ॥

तदा स्यान्महती वृष्टिः प्रावृट्काले न संशयः ॥ ६४ ॥

पौषस्य सप्तमी शुक्ला रेवतीसंयुता यदा ॥

अष्टम्यामश्विनीयोगो नवम्यां भरणी यदा ॥ ६५ ॥

एवाविधेषु योगेषु सविद्युद्वनदर्शनम् ॥

तदा स्यान्महती वृष्टिर्वर्षाकाले न संशयः ॥ ६६ ॥

पौषमासशुक्लपक्षमें पंचमीको जो हिम ( कुहर ) पड़े तो निःसन्देह वर्षाकालमें बहुत वृष्टि होवे ॥ ६४ ॥

तथा पौषशुद्धी सप्तमीको रेवती नक्षत्र हो, अष्टमीको अश्विनी नक्षत्र हो, नवमीमें भरणी नक्षत्र हो ॥ ६५ ॥

इस प्रकारके योगमें बिजली चमके, बादल हो तो वर्षा-कालमें बहुत वृष्टि होवे; इसमें संशय नहीं करना ॥ ६६ ॥

एकादश्यां यदा विद्युद्रोहिण्यां जलवर्शनम् ॥

पौषे यदा तदा वृष्टिः प्रावृषि स्यात्समर्घता ॥ ६७ ॥

पूर्णिमायां द्वितीयायां पौषे विद्युत्प्रदर्शनम् ॥

तदा स्यादन्नसम्पत्तिर्मेघच्छन्ने तथांबरे ॥ ६८ ॥

पौषशुद्धी एकादशीको बादल दो, बिजली कड़कै, रोहिणी नक्षत्रमें जल होवे तो वर्षाकालमें वृष्टि हो और अन्न सस्ता होवे ॥ ६७ ॥ तथा पौषमें पूर्णमासी तथा द्वितीयाको बादल व बिजली दीख पड़े तो अन्न बहुत उपजे वर्षाभी अच्छी होवे ॥ ६८ ॥

पौषमासेऽर्कसंक्रांतौ रविवारो यदा भवेत् ॥

धान्यमूल्यं त्रिगुणितं तदा भवति नान्यथा ॥ ६९ ॥

शनिवारे त्रिगुणितं भूमिपुत्रे चतुर्गुणम् ॥

बुधभृगवोः समत्वं च तुल्यार्द्धं शशिजीवयोः २७० ॥

पौषमासमें संक्रान्तिके दिन जो रविवार होवे तो वर्तमान मूल्यसे दूना मोल हो जावे इसमें अन्यथा नहीं ६९, शनिवार हो तो त्रिगुना, मंगलवार हो तो चौगुना, बुध, शुक हों तो समान भाव रहे, चन्द, गुरुवार हो तो वर्तमान मूल्यसे आधा मूल्य रहे अर्थात् सस्ता होवे ॥ २७० ॥

अत्र मासेऽर्कसंक्रान्तिः शनिभानुकुजेऽहनि ॥

तदा भवति दुर्भिक्षं तथा स्याद्राजप्रियदः ॥ ७१ ॥



( ८६ )

मयूरचित्रकम् ।

मूलमारभ्य याम्यांतं नभो भवति साभ्रकम् ॥

रौद्रमारभ्य वातांतं तदा वर्षति वासवः ॥ ७२ ॥

पौषमासमें तथा यहाँ किसी मासमें सूर्यकी संक्रान्ति शनि, सूर्य, मंगलवारको हो तो दुर्भिक्ष ( अकाल ) तथा राजाओंमें विग्रह होवै ॥ ७१ ॥ पौषमासमें जो मूलनक्षत्रसे लेके भरणीनक्षत्रतक जो बादल होवें तो वर्षाकालमें आर्द्रासे लेके स्वाति नक्षत्रके सूर्यतक वर्षा होवै ७२ ॥

धनराशिगते भानौ मूलमारभ्य चिंतयेत् ॥

गर्भाधानं ततो वृष्टिः पटे मासे हि सार्धके ॥ ७३ ॥

मूलक्षे हि यदा गर्भो भवत्यार्द्रा च वर्षति ॥

पूर्वाषाढे तथादित्यमुत्तरायां तथा गुरुः ॥ ७४ ॥

धनराशिकी संक्रान्तिमें मूलनक्षत्रको आदि लेके गर्भाधान अर्थात् सजलमेवोंका विचार करै जिससे साढ़े छः महीनोंमें अर्थात् आपादवृष्णपक्षमें वृष्टिको विचारै सो क्रम आगेके श्लोकोंमें वर्णन करते हैं ॥ ७३ ॥ पौषमासमें जो मूलनक्षत्रके दिन गर्भ अर्थात् मेघ बँधे तो वर्षा-

कालमें आर्द्राक्षत्र वृष्टि करै तथा पूर्वाषाढामें मेघ हो तो पुनर्वसुके सूर्यमें वर्षा होवै, उत्तराषाढामें मेघ हो तो पुष्यमें अच्छी वृष्टि होवै ॥ ७४ ॥

श्रवण सांपंभे चैव वासवे पितृभं तथा ॥

वारुणे भाग्यभं चैव पूर्वाभाद्रपदमाधिपे ॥ ७५ ॥

इस्तो वर्षत्युत्तरायां रेवत्यां वार्धकिस्तथा ॥

एतद्गर्भं समासेन मयोक्तं चिन्तयेत्सुधीः ॥ ७६ ॥

श्रवणक्षत्रमें जो मेघ हो तो आश्लेषाके सूर्यमें वर्षा होवै, धनिष्ठामें गर्भ हो तो मघा वर्ष तथा शतभिषामें मेघ होनेसे पूर्वमें वर्षा होवै, पूर्वाभाद्रपदामें गर्भ हो तो उत्तराफाल्गुनीके सूर्यमें अच्छी वर्षा होवै ॥ ७५ ॥ उत्तराभाद्रपदामें मेघ हो तो हस्तके सूर्यमें वर्षा होवै, रेवतीमें गर्भ हो तो चित्रास्वातके सूर्यमें वृष्टि होवै, यह गेने नक्षत्र करके कहा जो गर्भविचार मो बुद्धिमान् पंडित विचार लें ॥ ७६ ॥

तु(गर्भं) गते भानो यदि मेघः प्रवर्षति ॥

मृलांद्भवं तदा गर्भं नादेइयं देवचिन्तकः ॥ ७७ ॥

( ८८ ) मयूरचित्रकम् ।

भरण्यादिस्थिते भानौ यस्मिन्मेघः प्रवर्षति ॥

तस्मिन् तस्मिन् गर्भत्रक्षे गर्भनाशं वदेद्बुधः ७८ ॥

आश्विनीनक्षत्रके सूर्य प्रवेश समय वर्षा हो तो मूल नक्षत्रमें कहा गया गर्भ फल नहीं होवै ऐसे देवज्ञों, करके जानना ॥ ७७ ॥ एवं भरणी आदिके सूर्यमें जिस नक्षत्रके सूर्यमें वर्षा होवै उस उस नक्षत्रानुसार गर्भ फल नाश होवे ऐसा पंडित जन विचार कर कहे, जैसे भरणीके सूर्यमें मेघ वर्षे तो पूर्वाषाढाका गर्भ फल न हो, ऐसेही आगे यथाक्रमसे विचारै ॥ ७८ ॥

पौषस्य पंचदश्यां च विधोर्याम्योत्तरां तडित् ॥

दृश्यते वियदाच्छन्नं घर्नेवृष्टिस्तदा भवेत् ॥ ७९ ॥

पौषे स्वात्यां च सप्तम्यां यदा स्याद्धारिवर्षणम् ॥

मेघच्छन्नं नभोवापि तदा सस्याकुलाधरा ॥ ८० ॥

पौषमासकी पौर्णमासीके दिन जो चन्द्रमाके दक्षिण उत्तरमें बिजली चमकै और सजल मेघ बिर आवैं तो

उस दिन जो नक्षत्र हो सो नक्षत्र वर्षाकालमें वृष्टि करे  
॥ ७९ ॥ पौषमासमें सप्तमी तिथि वा स्वातिनक्षत्रके दिन  
वर्षा होवे तो तृण धान्य बहुत उपजै ॥ २८० ॥

कुह्वन्तासु त्रितिथिषु पौषे गर्भः प्रजायते ॥  
तदा सुभिक्षमारोग्यं श्रावण्यां वारिवर्षणम् ॥ ८१ ॥  
अमावास्या सहस्यस्य शनिसूर्यारवासरे ॥

यदि स्याद्भयमादेयं तदा सस्यमहर्घता ॥ ८२ ॥

पौषमासमें अमावास्यातक तीन तिथियोंमें अर्थात्  
१३ । १४ । ३० इन तिथियोंमें जो गर्भ होवे तो सुभिक्ष  
और आरोग्यता होवे तथा श्रावणीके दिन वर्षा होवे  
॥ ८१ ॥ पौषकी अमावास्याको जो शनि, सूर्य, मंगल  
बार हो तो भय उपजै और तृण महंगा होवे ॥ ८२ ॥

पौषमासस्य कुह्वां वा सप्तम्यां यदि वर्षणम् ॥  
प्रावृट्काले तदा तत्र समर्घं वारिवर्षणम् ॥ ८३ ॥  
शुक्लायां यदि सप्तम्यां घनेरान्छदितं नभः ॥  
तदा स्याच्छ्रावणे मासि सप्तम्यां वृष्टिरुत्तमा ॥ ८४ ॥

पौषमासकी अमावास्या वा सप्तमीके दिन जो वृष्टि होवे  
तो वर्षाकालमें सस्ता होवे और जल बहुत वैष ॥ ८३ ॥

तथा पौषशुदी सप्तमीके दिन जो बादल हों तो आवण  
शुदी सप्तमीको उत्तम वृष्टि होवे ॥ ८४ ॥

पौषस्य कृष्णपंचम्यां नभो विमलतारकम् ॥

स्वात्यां तुषारपातः स्याच्छ्रावणे तत्र वर्षणम् ॥ ८५ ॥

प्रजा भवन्ति मुदिताः सर्वसस्यसमर्धता ॥

एवं संचिन्त्य देवज्ञः पौषमासफलं वदेत् ॥ ८६ ॥

पौषकृष्ण पंचमीको जो आकाश निर्मल रहे और  
स्वातिनक्षत्रमें तुषार ( कुहर ) पड़े तो आवणमासमें वर्षा  
विशेष होवे ॥ ८५ ॥ और प्रजागण प्रसन्न हों, सब तृण  
सस्ते हों, इस प्रकार विचार कर देवज्ञ पौषमासका फल  
कहे ॥ ८६ ॥

अथ माघमासफलम्

माघशुक्लद्वितीया च तृतीया शुक्रसंयुता ॥

यदा स्यान्मंदसंयुता तदा युद्धाकुला धरा ॥ ८७ ॥

यदि स्याद्भुसंयुक्ता तदा सम्याकुला धरा ॥

राजानस्तत्र सुखिनः प्रजा नन्दन्ति नित्यशः ॥ ८८ ॥

माघशुदी द्वितीया वा तृतीयाको शुक्रवार हो तो समय अच्छा हो और जो शनिवार हो तो पृथिवीपर युद्ध होवे ॥ ८७ ॥ यदि वृहस्पति होवे तो तृण बहुत उपजै और राजा लोग सुखी होवें, प्रजा में नित्यही आनन्दता होवे ॥ ८८ ॥

पष्टी च पंचमी चैव कृष्णा माघस्य सप्तमी ॥

शुक्रार्कैरविसंयुक्ता तदा युद्धाकुला धरा ॥ ८९ ॥

एतं यांता यदा माघे न भवन्ति कदाचन ॥

भाद्रभासे च गोधूममुद्गधान्यनदपंता ॥ २९० ॥

माघकृष्णपष्टी पंचमी और सप्तमीको शुक्र, शनि, रविवार हो तो पृथिवीपर युद्ध बहुत होवे ॥ ८९ ॥ जो माघमासमें चट सोन नहीं होवे तो भाद्रपदमासमें गेहूँ, मूँग अन्न ये वस्तु नहीं होवें ॥ २९० ॥

माघमासं त्रयोदश्यां यदा न्याह्निमवपन्नम् ॥

( ९२ )

मयूरचित्रकम् ।

पृथ्वी तदान्नबहुला प्रजाः सुखसमान्विताः ॥ ९१

हिमं न पातितं मासे ज्येष्ठे मूले च वर्षति ॥

नार्द्रायां पातित वारि कालो दुष्टस्तदा मतः ॥ ९२ ॥

जो माघमासकी त्रयोदशीके दिन कुहर पड़े तो पृथ्वी-  
वीपर अन्न बहुत उपजै और प्रजा सुखी रहे ॥ ९१ ॥  
जो माघमें हिम न गिरे तो ज्येष्ठमासमें मूल नक्षत्रके दिन  
वर्षा होवे तो आर्द्रानक्षत्रके सूर्यमें जल नहीं गिरे और  
समय अच्छा नहीं होवे ॥ ९२ ॥

माघमासे च संक्रांतौ यदि वर्षति वारिदः ॥ ९३ ॥

माघशुक्रप्रतिपदि बुधवारो यदा भवेत् ॥

अन्नं महर्धतां याति वर्षे त्वागामिके भवेत् ॥ ९४ ॥

माघमासमें संक्रांतिके दिन जो वर्षा होवे तो पृथ्वी-  
पर तृण बहुत उपजै, गौएं दूध बहुतसा देवें ॥ ९३ ॥  
माघशुक्रप्रतिपदाको जो बुधवार हो तो आगे वर्षमें भय  
होवे और अन्न महंगा होवे ॥ ९४ ॥

पंचार्काः पंच वा मौष्माः पंच वा मंदवातराः ॥

दुर्भिक्षं भयमादेश्यं तदा शेषाः शुभावहाः ॥ ९५ ॥

येषु येषु च मासेषु तस्य वृद्धिः प्रजायते ॥

सुभिक्षं क्षेममारोग्यं तेषु ज्ञेयं विचक्षणैः ॥ ९६ ॥

माघमासमें पांच रविवार वा पांच भौमवार वा पांच शनिवार हों तो दुर्भिक्ष और भय होंगे, शेष बार पांच हों तो शुभ जानना ॥ ९५ ॥ जिस महीनेमें पांच शुभ बार हों तो सुभिक्ष क्षेम आरोग्यता होवै, ऐसा पंडितोंकरके जानना ॥ ९६ ॥

माघमासस्य प्रतिपत्सवाता मेघवर्जिता ॥

यदा याति मह्यत्वं तैलद्रव्यं सुगन्धकम् ॥ ९७ ॥

द्वितीया मेघसंयुक्ता धनधान्यविबुद्धिदा ॥

माघे मासि तृतीयायां गर्जनं च जलं विना ॥ ९८ ॥

संप्रवृत्तत्र कर्तव्यो गोधूमस्य यवस्य च ॥

चतुर्थी जलसंयुक्ता नालिकेरोयंदो मतः ॥ ९९ ॥

माघमासकी प्रतिपदाको जो वायु घेहै और येष वर्षतो



( ९४ ) मयूरचित्रकम् ।

तेल और सुगंधवस्तु यहँगी हों ॥ ९७ ॥ तथा जो द्वितीयाको बादल हो तो धन्यधान्यकी वृद्धि हो, तृतीयाको जो विना वर्षा होनेके गरजे ॥ ९८ ॥ तो मेहँ और यषका संग्रह करनेसे लाभ होवे तथा चतुर्थीको मेघ वरसे तो नारियलसे द्रव्यका लाभ होवे ॥ ९९ ॥

पंचमी मेघसंयुक्ता यदा जलविवर्जिता ॥

तदा भाद्रपदं मासि स्वल्पवृष्टिश्च जायते ॥ ३०० ॥

पष्ट्यां निरभ्रं गगनं दिशश्च विमला यदा ॥

संग्रहस्तत्र फलव्यः कार्पासस्य हितैपिणा ॥ १ ॥

माघमें पंचमीको जो बादल हो और जल न वर्षे तो भाद्रमासमें थोड़ी वृष्टि होवे ॥ ३०० ॥ तथा छठिको जो बादल न हो और दिशा आकाश निर्मल रहें तो अपने लाभकी इच्छावाला कपासका संग्रह करे ॥ १ ॥

सप्तमी सोमसंयुक्ता राजविग्रहकारिका ॥

मासे धवलपक्षस्य जहादुर्गिशदापिष्ठा ॥ २ ॥

आदित्योदयवेलायां यदा स्यादष्टमी तिथिः ॥

दा रौद्रगते सूर्ये श्रावणे नहि वर्षति ॥ ३ ॥

माघवदीप्ततमीको जो सोमवार हो तो राजाओंका  
बेगाद हो, तथा शुद्ध सप्तमीको जो सोमवार हो तो बड़ा  
भकाल पड़े ॥ २ ॥ माघमें सूर्योदयसमय अष्टमी तिथि  
हो, जितनी हो उतनीही तिथि आपाटमें अटथी हो और  
आर्द्रापर सूर्य हो तो भावणमें वर्षा नहीं देवे ॥ ३ ॥

नवम्यां चन्द्राविंशस्य परिवेषश्च जायते ॥

तदापाटं महावृष्टिः पूषं धान्यगद्वर्षता ॥ ४ ॥

माघमासे तपरये वा चैत्रापाटे च माधये ॥

सप्तम्यां न्यातियुक्तायां लक्षणं च ह्युभयदम् ॥ ५ ॥

माघशुदीनवमीके दिन जो चन्द्रमाके दिन जो चन्द्र-  
माके आसपास मंडल होवे तो प्रथम अस महीना होवे,  
पश्चात् सरता होवे और आपाटमें वर्षा अच्छी होवे  
॥ ४ ॥ माघ, फाल्गुन, चैत्र, आपाट, वैशाख इन महीनोंमें  
नवमीको न्यातिलक्षण हो तो शुभ लक्षण और शुभ हो  
जानना ॥ ५ ॥

शुक्रपक्षस्य सप्तम्यां माघे व्योमान्वितं घनैः ॥

पुरो वातोथ कौबेरो वारुण्यां चंचला यदि ॥ ६ ॥

हिमं पतति वा तत्र वांति वातास्तदोद्धताः ॥

तदा सुभिक्षमादेश्यं तस्मिन्देशे विचक्षणैः ॥ ७ ॥

माघके शुक्रसप्तमीको जो बादल होवे और पूर्वकी और उत्तरकी पवन चलै तथा जो पश्चिममें बिजली चमके ॥ ६ ॥ अथवा पाला पड़े वा प्रबल पवन चलै तो इस देशमें पंडितोंकरके सुभिक्ष हो ऐसा कहना ॥ ७ ॥

माघमासस्य नवमी दशम्येकादशी तथा ॥

विद्युद्वातसमायुक्ता तदा बहुजलप्रदा ॥ ८ ॥

पंचमी कृष्णपक्षस्य माघमासस्य पष्टिका ॥

सप्तमी शुक्रमन्देन्दुयुक्ता सस्यार्द्धिदा मता ॥ ९ ॥

माघशुक्लनवमी, दशमी तथा एकादशीको बिजली चमके और पवन चलै तो बहुत जल होवे ॥ ८ ॥ माघ कृष्णपंचमी, पष्टी, सप्तमीको जो शुक्र, शनि, सोमवार होवे तो खेतीकी वृद्धि होवे ॥ ९ ॥

स्तं योगा यदा माघे न भवन्ति तदा खलु ॥

गोधूमाः शालयो मुद्गाः भाद्रे यांति महर्घताम् ३१०

यह पूर्वाक्ष योग जो माघमें नहीं होंगे तो गेहूँ, चावल,  
गन्ग यह वस्तु भाद्रमासमें महँगी हो जावे ॥ ३१० ॥

राघमासे त्रयोदश्यां हिमेराच्छादितं नभः ॥

यदा तदा महर्घन्ति व्रीहयो नात्र संशयः ॥ ११ ॥

माघमासमें त्रयोदशीको जो कुहरसे आकाश ढक  
जावे तो अन्न सस्ता होवे इसमें संशय नहीं ॥ ११ ॥

अमावास्या यदा छन्ना तदा भाद्रे जलं भवेत् ॥

पूर्णमासी घनछन्ना पष्टे मासि महर्घता ॥ १२ ॥

जो माघमासमें अमावास्याको बादल होवे तो भाद्र-  
मासमें जल बहुत होवे, तथा जो पूर्णमासीके दिन बादल  
हो तो छठे महीनेमें सब वस्तु महँगी होवे यह माघमा-  
सका फल कहा ॥ १२ ॥

अथ फाल्गुनमासफलम् ।

यदा वक्रगती स्यातां शनिभौमौ तपस्यके ॥

माघे चाद्यासु तिथिषु त्रिषु सस्यस्य संग्रहः ॥ १३ ॥

कार्यो विपश्चिता तत्र पक्षांते स्याच्चतुर्गुणम् ॥

फाल्गुने च गुरोरस्तं वक्रं वा यदि जायते ॥

तदा सस्यमहर्षत्वं शनिर्वा वक्रतां व्रजेत् ॥ १४ ॥

जो फाल्गुनमासमें शनि, मंगल वक्री होवें, अथवा माघमें प्रतिपदा, द्वितीया, तृतीया इन तिथियोंमें वक्री होवे तो तृणधान्यका संग्रह करे ॥ १३ ॥ फिर पंद्रह दिन उपरान्त वेचै तो चौगुना लाभ होवे, तथा फाल्गुनमासमें बृहस्पतिका अस्त हो वा वक्री होवे वा शनि वक्री हो तो तृण महंगा होवे ॥ १४ ॥

यदा फाल्गुनके मासे प्रयात्यस्तं भृगोः सुतः ॥ १५ ॥

धान्यादिसर्वसस्यानां तदा वाच्या महर्षता ॥

तदा दुर्भिक्षमादेश्यं पण्मासं देवचिन्तकैः ॥ १६ ॥

जो फाल्गुनमें शुक्र अस्त होवे ॥ १५ ॥ तो अन्न और तृण सब महंगा होवे, और छः मासतक देवज्ञ जनोंको अन्न महंगा हो ऐसा कहना चाहिये ॥ १६ ॥

अतमी कृत्तिकायुक्ता फाल्गुनस्य सिता यदा ॥  
तदा भाद्रपदे मासे कुह्वां मेघः प्रवर्षति ॥ १७ ॥  
विना वातं घनेऽद्यन्नं वियत्तस्यां तिथौ यदा ॥  
विद्युद्वा जायते तत्र तदा सस्यावृता मही ॥ १८ ॥

फाल्गुनशुक्ल सप्तमीको जो कृत्तिका नक्षत्र हो तो भाद्र-  
मासमें अमावास्याके दिन मेघ वर्षे ॥ १७ ॥ तथा उसी  
दिन जो विना पवन चले बादल होवे और बिजली चमके  
तो पृथिवीपर तृण बहुत उपजै ॥ १८ ॥

फाल्गुनस्य त्रयोदश्यामष्टम्यां वृष्टिरुत्तमा ॥  
यदि स्याच्च सितायां वे तदा लोका निरामयाः ॥ १९ ॥  
प्रतिपच्छुक्लपक्षस्य वृद्धिं याति तदा शुभम् ॥  
तृतीया दुःखदा प्रोक्ता चतुर्दश्यष्टमी तथा ॥ २० ॥

फाल्गुनशुदी त्रयोदशी और अष्टमीके दिन जो वर्षा  
होवे तो लोकमें मनुष्य आरोग्य रहें ॥ १९ ॥ फाल्गुन  
शुक्लमें जो प्रतिपदाकी वृद्धि हो तो शुभ जानना, तृतीयाकी

( १०० )

मयूरचित्रकम् ।

वृद्धि हो तो दुःस्वदायक जानना, तथा चतुर्दशी वा अष्ट-  
मीकी वृद्धिसेभी यही फल जानना ॥ ३२० ॥

फाल्गुने मीनसंक्रान्तौ भानुवारे तिथिक्षयः ॥

भौमशान्योश्च दुर्भिक्षं सितेज्येन्दो सुभिक्षकम् ॥ २१ ॥

फाल्गुनमास मीनकी संक्रान्तिमें रवि, भौम, शनि इन  
बारोंमें तिथिका क्षय होवै तो दुर्भिक्ष ( महँगा ) होवै,  
और शुक्र, बृहस्पति, चन्द्र इन बारोंमें तिथिक्षय होनेसे  
सुभिक्ष होवै ॥ २१ ॥

अथाऽल्पवृष्टिलक्षणम् ।

माघे हिमं न पतितं वातो वाति न फाल्गुने ॥

न च व्योमान्वितं चैत्रे घनेन पतनं यदि ॥ २२ ॥

करकाणां च वैशाखे ज्येष्ठे चण्डातपो न चेत् ॥

तदाऽतितुच्छवृष्टिः स्यात्प्रावृट्काले न संशयः ॥ २३ ॥

जो माघमें पाला न गिरै, फाल्गुनमें पवन नहीं चलै,  
चैत्रमें बादल नहीं हो ॥ २२ ॥ और जो वैशाखमें ओला  
नहीं गिरै, ज्येष्ठमें सूर्य नहीं तपै अर्थात् अधिक गर्मी-

नहीं होवे तो वर्षासमयमें बहुत थोड़ी वृष्टि होवे इसमें संशय नहीं ॥ २३ ॥

अथ दुर्भिक्षलक्षणम् ।

आपादस्यासिते पक्षे दशम्यादिदिनत्रये ॥

रोहिणीकालमाख्याति सुखदुर्भिक्षलक्षणम् ॥ २४ ॥

रात्रावेव निरभ्रं स्यात्प्रभाते मेघडंबरम् ॥

मध्याह्ने जलविंदुः स्यात्तदा दुर्भिक्षकारणम् ॥ २५ ॥

आपादमासके कृष्णपक्षकी दशमी, एकादशी, द्वादशी इन तीनों तिथियोंमें जो रोहिणी नक्षत्र आवे तो सुभिक्ष, मध्यम दुर्भिक्ष यह फल तिथिक्रमसे जानना ॥ २४ ॥ और रात्रि मेघरहित हो प्रातःकाल मेघ गरजै, मध्याह्न समय बूंदें पड़ें तो दुर्भिक्षका कारण कहिये अर्थात् अन्न महंगा होवे ऐसे लक्षणसे विचारना ॥ २५ ॥

अथ जललग्नम् ।

कुंभः कर्कवृषो मीनमकरो वृश्चिकस्तुला ॥

जललग्नानि चोक्तानि लग्नेष्वेतेषु सूर्यभम् ॥



( १०२ ) मयूरचित्रकम् ।

लभत्येव सदा वृष्टिर्ज्ञातव्या गणकोत्तमैः ॥ २६ ॥

कुंभ, कर्क, वृष, मीन, मकर, वृश्चिक, तुला यह ७ जललग्न हैं इनमें जो सूर्यनक्षत्र मिले तो वर्षा होवे ऐसा पंडितों करके जानना ॥ २६ ॥

अथ मेघनक्षत्रमाह ।

अश्विनीमृगपुष्येषु पूषविष्णुमघासु च ॥

स्वात्यां प्रविशते भानुर्वर्षते नात्र संशयः ॥ २७ ॥

अश्विनी, मृगशिरा, पुष्य, रेवती, श्रवण, मघा, स्वाति ये जलनक्षत्र हैं, इन नक्षत्रोंमें सूर्य प्रवेश करे तो वर्षा अच्छी होवे इसमें संशय नहीं करना ॥ २७ ॥

अथ पुंस्त्रीनपुंसकनक्षत्राणि ।

आर्द्रादिदशकं स्त्रीणां विशाखात्रिनपुंसकम् ॥

मूलाच्चतुर्दशं पुंसां नक्षत्राणि क्रमादुधैः ॥ २८ ॥

वायुर्नपुंसके भे च स्त्रीणां भे चाभ्रदर्शनम् ॥

स्त्रीणां पुरुषसंयोगे वृष्टिर्भवति निश्चितम् ॥ २९ ॥

भाषाटीकामहितम् । ( १०३ )

अब पुरुष, स्त्री, नपुंसक नक्षत्र कहते हैं आर्द्रासे लेकर  
 स्वातिपर्यन्त दस नक्षत्र स्त्रीसंज्ञक हैं, विशाखासे ज्येष्ठातक  
 तीन नक्षत्र नपुंसक हैं और मूलसे आर्द्रापर्यन्त चौदह  
 नक्षत्र पुरुषसंज्ञक हैं ॥ २८ ॥ नपुंसकनक्षत्रमें जो वर्षाका  
 नक्षत्र प्रवेश हो तो वायु चले, स्त्रीनक्षत्रमें सूर्यनक्षत्र लगे  
 तो मेघदर्शन रहे अर्थात् बादल बेरे रहें वर्ष नहीं, तथा  
 स्त्रीपुरुषका योग हो तो निश्चय वृष्टि होवे ॥ २९ ॥

अथ सूर्य तथा चन्द्रनक्षत्रसंज्ञा ।

अश्विन्यादित्रयं चैव आर्द्रादेः पंचकं तथा ॥

पूर्वाषाढादि चत्वारि चोत्तरारेवतीद्वयम् ॥ ३३० ॥

उक्तानि शशिभान्यत्र प्रोच्यन्ते सूर्यभान्यथ ॥

रोहिणी च मृगश्चैव पूर्वाफाल्गुनिका तथा ॥ ३१ ॥

सूर्ये सूर्ये भवेद्वायुश्चन्द्रे चन्द्रे न वर्षति ॥

सूर्यचन्द्रसमायोगस्तदा वर्षति मेघराट् ॥ ३२ ॥

अश्विनी आदि तीन नक्षत्र, आर्द्रा आदि पाँच नक्षत्र  
 पूर्वाषाढासे चार नक्षत्र अर्थात् अश्विनी, भरणी, कृत्तिका,

## ( १०४ ) मयूरचित्रकम् ।

आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा, श्रवण, धनिष्ठा और उत्तरा, रेवती ॥ ३३० ॥ यह नक्षत्र चंद्रमाके हैं, अब सूर्यके नक्षत्र कहते हैं, रोहिणी, मृगशिरा तथा पूर्वाफाल्गुनी आदि सब शेष नक्षत्र सूर्यके हैं ॥ ३१ ॥ सूर्यसूर्यके योगमें वायु वहै, चन्द्रचन्द्रके योगमें न वर्ष और सूर्यचन्द्रमाका योग हो तो वर्षा बहुत होवे ३२

अथ चन्द्रसूर्यपरिवेपलक्षणम् ।

यदि भवति शशांके मंडले चंद्ररश्मौ  
रविशनिकुजवारे पौषमासे त्वमायाम् ॥

द्विगुणदहनवेदेस्तुल्यते रत्नमौल्यं

बुधगुरुभृगुसोमे स्वल्पमौल्यं हि धान्यम् ॥ ३३ ॥

जो पौष कृष्ण अमावास्याको रवि, शनि, मंगल वारमें सूर्यचन्द्र मंडल होवै तो अन्नका मौल्य द्विगुण, त्रिगुण, चौगुण हो जावै, किन्तु रत्नोंके समान मूल्यकी तुलना करे और बुध गुरु शुक्रवार हो तो थोड़ा मोल अन्नका हो जाय अर्थात् अन्न सस्ता बिके ॥ ३३ ॥

रविशशिपरिवेपे पूर्वयामे च पीडा  
रविशशिपरिवेपे मध्यमे चाल्पवृष्टिः ॥  
रविशशिपरिवेपे धान्यनाशस्तृतीये  
रविशशिपरिवेपे राज्यभंगश्चतुर्थे ॥ ३४ ॥

जो सूर्यचंद्रका मंडल पहले प्रहरमें होवै तो मनुष्या-  
दिको पीडा हो, और दूसरे प्रहरमें सूर्यचन्द्रमंडल होनेसे  
थोड़ी वृष्टि होवे, तीसरे प्रहरमें सूर्यचन्द्रमंडल हो तो धान्य-  
का नाश हो, चौथे प्रहरमें सूर्यचन्द्रमण्डल हो तो राज्य-  
भंग होवै ॥ ३४ ॥

अथ संवत्सरलक्षणफलम् ।

यस्मिन्वर्षे च लग्ने शशिनि तनुगते सौम्य-  
राशिस्थिते वा केन्द्रे याते प्रचुरमुदकं सौम्य-  
योगोपदृष्टे ॥ पापेदृष्टे न च बहुजलं प्रश्र-  
कालेपि तद्देवाच्यं सर्वं फलमविकलं च-  
न्द्रवद्भार्गवोपि ॥ ३५ ॥

जिस संवत्सरकी लग्ने अथवा केन्द्रमें जो चन्द्रमा

( १०६ ) मयूराचित्रकम् ।

होय शुभग्रहके वरमें हो वा शुभग्रहकी दृष्टि हो तो बहुत वृष्टि होवे और जो चन्द्रमा पापग्रहकी राशिमें हो पापग्रहकी दृष्टि हो तो बहुत जल नहीं वर्ष, यह चन्द्रमाके तद्वत् शुक्रकाभी विचार करना और वृष्टिप्रश्नसमयमेंती यही विचारना ऐसा कहा है ॥ ३५ ॥

अथ दुर्भिक्षलक्षणम् ।

उल्कापातो वज्रपातः परिधिः शशिसूर्ययोः ॥ ३६ ॥

धूमकेतुः शक्रचापो ग्रहणं बहुधा यदा ॥

तदा सकलवस्तूनां जायते च महर्षता ॥ ३७ ॥

उल्कापात ( तारे टूटना ) वज्रपात ( बिजली गिरना ) सूर्यचन्द्रमंडल होना, धूमकेतु ( पुच्छवाले नक्षत्र ) का उदय, इन्द्रधनुषका निकलना, बहुतसे ग्रहण ऐसे योग हों तो सब वस्तु महँगी होवे ॥ ३६ ॥ ३७ ॥

अथ वृष्टिलक्षणम् ।

प्रष्टा पृच्छन्स्पृशति सलिलं वारिकायांमु-  
सो वा पृच्छकाले सलिलमिति वा श्रूयते

सन्मुखे वा ॥ दृष्टः कूपो विमलसालिलं चेद्बद्धे-  
द्वारिवृष्टिमन्तःसर्वं भवति च फलं व्यत्यये  
व्यत्ययेन ॥ ३८ ॥

जो वृष्टिप्रभकर्ता प्रभसमय जलका स्पर्श करे अथ-  
वा उस समय जलशब्द सुननेमें आवे, या जलकी बनी  
हुई वस्तु तथा कुवाँ, बावड़ी, तालाव इन पर दृष्टि जाय  
तो जलकी वृष्टि अच्छी होवे इससे विपरीत लक्षण होवे  
तो विपरीत फल हो अर्थात् वर्षा नहीं होवे ॥ ३८ ॥

प्रातःकाले पीतरश्मिर्दुर्निरीक्ष्यो भवंद्रविः ॥

स्निग्धवैडूर्यकांतिश्चेन्मेघो वृष्टिप्रदः स्मृतः ॥ ३९ ॥

प्रातःकाले यदा सूर्यो मध्याह्ने दुःसहो भवेत् ॥

तद्दिने वृष्टिदः प्रोक्तो घृतस्वर्णसमप्रभः ॥ ३४० ॥

जो प्रातःसमय सूर्यमें तेज अधिक हो, चाप पीली हो  
और मेघ चिकने श्यामवर्ण होंय तो वे मेघ वर्षा करनेवा-  
ले कहे हैं ॥ ३९ ॥ तथा जो प्रातः सूर्योदयसमयमें वा

मध्याह्नसमयमें सूर्यका तेज अधिक हो और भेव गलाये  
हुये सुवर्णकांतिके समान हो तो उसी दिन वृष्टि करने-  
वाले भेव कहिये ॥ ३४० ॥

यदा जलं वै विरसं जलदा गोत्रसन्निभाः ॥

दिशश्च विमलाः सर्वाः कार्कांडाभं नभस्तलम् ४१

न यदा वाति पवनश्छन्नं यान्ति झषादयः ॥

शब्दं कुर्वन्ति मंडूकास्तदा वृष्टिरनुत्तमा ॥ ४२ ॥

जो जल विरस हो, बादल पर्वतसदृश हों, दिशायें नि-  
र्मल हों, कौएके अंडेके समान आकाश होय ॥ ४१ ॥

तथा पवन न चले, मछली आदि जलजन्तु पृथिवीमें जा-  
लेंगे, भेंडक शब्द करने लगे तो उत्तम वृष्टि होवे और  
शीघ्र वर्षा होवे ॥ ४२ ॥

नखैर्लिखन्ति मार्जाराः पृथिवीं च यदा भृशम् ॥

लोहानां मलनिचयो विस्रगंधो यदा भवेत् ॥ ४३ ॥

सेतुं कुर्वन्ति रथ्यायां शिशवो मिळिता यदा ॥

शुद्धांजनाभा गिरयो बाष्पमुद्रितकन्दराः ॥ ४४ ॥

बिही, कुत्ता आदि अपने पंजोंसे पृथिवीको खोदें लो-  
हेके मेलसे दुर्गन्धि आवे ॥ ४३ ॥ मार्गमें बालक सब  
मिलकर सेतु बधि और अंजनके समान पर्वत हो जाँय,  
पर्वतोंकी गुफा पमोजने लें ॥ ४४ ॥

पिपीलिका यदांडानि गृहीत्वोच्चं प्रयांति च ॥

सर्पा वृक्षं समायान्ति तदा वृष्टिरभूत्किञ्च ॥ ४५ ॥

गावः सूर्यं निरीक्षन्ते कृकलासगणास्तथा ॥

गृहान्नेच्छन्ति पशवो निर्गमं कुमुरास्तथा ॥ ४६ ॥

तथा जो चिउँटा अपने अँठोंको लेलेकर ऊपरको चढ़े,  
सर्प वृक्षपर चढ़े तो निश्चय वृष्टि होवे ॥ ४५ ॥ तथा गौ  
सूर्यकी ओर देखें गिरगिटभी सूर्यको देखें पशु घरसे जाने-  
की इच्छा नहीं करे तथा कुत्तेभी घरसे बाहर निकलने नहीं  
चाहें ॥ ४६ ॥

लताश्चोर्वमुखाः सर्वाः स्नानं कुर्वन्ति पक्षिणः ॥

पांसुभिश्च तृणाग्राणि सेवन्ते वा सरीसृपाः ॥ ४७ ॥

वियतितिरपक्षाभमलिपक्षनिभं तथा ॥



(११०)

मयूरचित्रकम् ।

तदा वृष्टिः समादेष्ट्या निश्चितं देवचिन्तकेः ॥४८॥

वृक्षोंकी शाखायें ऊंची खड़ी हो जाय और जीवजन्तु पक्षी आदि धूलमें स्नान करें तथा वृक्षोंकी शाखाओंके अग्रभागमें कीड़े झूलें ॥ ४७ ॥ और तीतरके पंख समान बादल होय तो दैवज्ञों करके निश्चय वृष्टि कहना चाहिये यह वृष्टिके लक्षण वर्णन किये ॥ ४८ ॥

अथ सद्योवृष्टिलक्षणम् ।

॥ प्रावृहकाले शीतरश्मिर्यदा स्याच्छुक्रान्तूर्य्ये  
सौम्यदृष्टो यदा स्यात् ॥ बुद्धिस्थाने सप्तमे  
च त्रिकोणे वृष्टिर्वाच्या देवविद्भिः पुराणैः ॥४९॥

वर्षाकालमें जो शुक्रसे चौथे घरमें शुभदृष्ट चन्द्रमा हो तथा पांचवें सातवें और त्रिकोण ९।५ में जो चंद्रमा हो शुभ ग्रहोंकी दृष्टि हो तो शीघ्रवृष्टि कहिये यह प्राचीन आचार्यों करके कहा गया है ॥ ४९ ॥

शुभाश्व जलराशिस्थाः केन्द्रगाः स्वीयगेहगाः ॥

जलप्रदा सिंते पक्षे विधौ चोदयगे जले ॥ ३५० ॥

सप्तमौ रविचंद्रौ सितरविजौ रसातले लग्नात् ॥

प्रावृत्काले जलदो भवतो वा द्वितीयसहजस्थौ ५१ ॥

जो शुभ ग्रह जलराशिमें हो और केन्द्रमें यह स्वगृही होय तथा जो चन्द्रमाका उदय जलराशियोंमें हो और शुक्रपक्ष होय तो वर्षा शीघ्र होवे ॥ ३५० ॥ वर्षाकालमें लग्नसे जो सातवें सूर्य चन्द्रमा हों और चौथे शुक्र शनि हों अथवा दूसरे तीसरे हों तोभी वर्षा शीघ्र होवे ॥ ५१ ॥

प्रश्नलग्नात्तोयराशिर्द्यदि वित्तस्तृतीयके ॥

तोयसंज्ञो ग्रहस्तत्र भवत्यभ्रं जलग्रहम् ॥५२॥

संयोगे सितबुधयोस्तथा च गुरुशुक्रयोः ॥

तथैव जीवबुधयोर्वृष्टिः स्यान्नात्र संशयः ॥५३॥

प्रश्नलग्नसे दूसरे वा तीसरे जलराशि हो और वहां जल ग्रह बैठा होय तो शीघ्र वर्षा होवे ॥ ५२ ॥ तथा जो शुक्र बुध एकराशिमें हों बृहस्पति, शुक्र एक घरमें हों अथवा बुध गुरु एक राशिमें हो तो निस्तन्देह शीघ्र वर्षा होय ५३

यदा भवन्ति सूर्यस्य ग्रहाः पृष्ठावलंबिनः ॥

पुरतां वा यदा यांति तदा त्वेकार्णवा मही ५४॥

बुधभृग्वोर्मध्यगतः सूर्यश्चेजलशोषकः ॥

तयोर्यदि समीपस्थस्तदा बहुजलप्रदः ॥ ५५ ॥

जो सूर्यके आगे वा पीछे ग्रह होय तो जलमयी पृथ्वी हो जावे ॥ ५४ ॥ तथा जो बुध और शुक्रके मध्यगत सूर्य होवे तो जलको शोषे और जो पासही होय तो शीघ्र बहुत जल वरसे ॥ ५५ ॥

अग्रे याति यदा भौमः पश्चाच्चलति भास्करः ॥

तदा वृष्टिर्न विपुला जायते नात्र संशयः ॥ ५६ ॥

जो आगे मंगल होय और पीछे सूर्य होय तो वर्षा बहुत नहीं होवे अन्यथा वृष्टि होवे इसमें संशय नहीं ५६

अतिचारगते मन्दे भौमे मन्दे च वक्रिणि ॥

हाहाभूतं जगत्सर्वं विशेषादक्षिणापथे ॥ ५७ ॥

बृहस्पति अतिचार हो और मंगल शनि वक्री होय तो जगत्में हाहाकार हो विशेषकरके दक्षिणमें पीडा हो ५७

दशों वै पौषमासे भवति यदि बलारातिनक्ष-  
त्रयुक्तो देशे सस्यं महर्घं भवति च तदा मू-  
ल्युक्तोऽर्धमौल्यम् ॥ पूर्वापाढायुतश्चोद्विगु-  
णमप्युतो वैश्वदेवेन कुर्यात् दुर्भिक्षं राष्ट्रभगं  
जनपदमरणं नर्तयत्को पिशाचान् ॥ ५८ ॥

जो पौषमासको अमावास्याको ज्येष्ठा नक्षत्र हो तो  
देशोंमें तृण महंगा होवे, मूलनक्षत्र हो तो आधा गोल  
विके, पूर्वापाढा नक्षत्र हो तो दूना मोल होवे, उत्तरापाढा  
नक्षत्र होवे तो दुर्भिक्ष पडे और मनुष्यादि प्राणी बहुत मरे  
तथा भूत पिशाच नाचें ॥ ५८ ॥

माहेयवारं रविजे कुजे वा भवेदमा शीतक-  
रप्रिया वा ॥ लोकः सशोकः क्षितिपाललो-  
कः परस्परं युद्धयति शस्त्रसंघैः ॥ ५९ ॥

जो मार्ग पौर्णमासी तथा अमावास्याको शनि मंगल  
व मृग्यवार हो तो मन्त्र लोकमें शोक व राजाओंमें परस्पर  
हथियारोंसे युद्ध करें ॥ ५९ ॥

( ११४ ) मयूरचित्रकम् ।

छत्रस्य भंगः सलिलस्य नाशो लोकेषु पीडा  
पशुवित्तहानिः ॥ स्याच्छ्रीविहीनो यदि चक्र-  
वर्ती वक्रे च शोरे पितृसंस्थिते च ॥ ३६० ॥

जो मघानक्षत्रपर स्थित शनैश्वर वक्त्री होवे तो छत्रभंग  
हो, जल, पशु तथा द्रव्यका विनाश हो और पशुओंमें पीडा  
व चक्रवर्ती राजाभी लक्ष्मी करके हीन होवे ॥ ३६० ॥

यदा धनुर्मीनवृषालिसंस्थिते धरासुते सूर्य-  
सुते च वक्रिणि ॥ हयैश्च नागैश्च नरैश्च गो-  
कुलैस्त्रिभागशेषां कुरुते वसुन्धराम् ॥ ६१ ॥

जो धन मीन वृष वृश्चिक इन राशिषोंपर स्थित मंगल  
और शनैश्वर वक्त्री होवें तो घोडा हाथी और मनुष्य गोंयें  
ये सब जीव पृथ्वीपर तिहाई शेष रहें ॥ ६१ ॥

यदारशोरी सुरराजमन्त्री यदेकराशौ समस-  
तके वा ॥ अयोध्यलंकापुरमध्यदेशे क्षुधा-  
भयं शस्त्रभयं करोति ॥ ६२ ॥

जो मंगल शनैश्वर बृहस्पति यह ग्रह एक राशिपर हों

अथवा परस्पर सातवें हों तो अयोध्या लंका इनके मध्यके देशोंमें दुर्भिक्ष और शस्त्रका भय होवे ॥ ६२ ॥

वक्रं गतो रविसुतोऽथ धरासुतो वा हस्ते त-  
थैव पितृदैवतरोद्रभेषु ॥ क्षत्रस्य भंगपतनं  
भुवि सैनिकानां सर्वत्र लोकमरणं खलु शस्त्र-  
संघैः ॥ ६३ ॥

शनि अथवा मंगल हस्त मवा आर्द्रा इन नक्षत्रोंपर स्थित होके वक्रां होवें तो क्षत्रभंग हो और सेना कटकर पृथ्वीपर गिरे, तथा निश्चय करके लोकमें मनुष्योंका मरण हथियारोंके समूहसे होवे ॥ ६३ ॥

कन्यायां मीनसिंह वृषधनुषि यदा वक्रगौ  
भौममन्दौ पृथ्वीशाकूररूपा बहुरिपुदलिता  
विग्रहश्चैव पीडा ॥ दुर्भिक्षं सस्यनाशो ग्रह-  
गतिभयदाः पित्तरोगाः प्रजानां पीडयन्ते  
चात्रिगोत्रा नृपमहिषगजास्तन्निवृत्तौ तु या-  
वत् ॥ ६४ ॥

( ११६ ) मयूरचित्रकम् ।

जो कन्या, मीन, सिंह, वृष, धनु इन राशियोंपर स्थित मंगल शनैश्वर वकी होय तो राजाओंको दुष्टरूप शत्रुओंसे बहुत पीडा तथा बिगाड होवे, और दुर्भिक्ष, तृणका नाश होवे, प्रजामें भय पित्तकी बाधा हो तथा अत्रिगोत्रवाले अर्थात् चन्द्रवंशी राजाओंको, पशुओंको पीडा हो, जब मारिं होवे तब यह फल निवृत्त होवे ॥ ६४ ॥

शुक्रसौम्योर्द्वयोरस्तमेकराशौ यदा भवेत् ॥

अन्नपीडा महायुद्धं देशे देशे च विग्रहः ॥ ६५ ॥

चत्वारः पंचगाः खेटा बलिनस्त्वेकराशिगाः ॥

राज्ञां बहुभयं दद्युरभिर्दुःखदा मताः ॥ ६६ ॥

शुक्र, शनि यह दोनों ग्रह जो एक राशिपर होवे और अस्त हो जावें तो अन्नपीडा, महायुद्ध, देशदेशोंमें विग्रह होवे ॥ ६५ ॥ तथा जो चार ग्रह एक राशिके होके वर्ष ( सम्बत्सर ) लग्नसे पंचम स्थानमें हों तो राजाओंको बहुत भय और दुःखके देनेवाले जानिये ॥ ६६ ॥

यदा प्रतिपगौ खेटौ नृपं क्षोभयतस्तदा ॥

प्रतीपगास्त्रयः खेटा युद्धदृष्टिभयप्रदाः ॥ ६७ ॥

राज्यभंगं हि कुर्वन्ति चत्वारो यदि वक्रिणः ॥

प्रतीपगाः पंच खेटा भंगदा राज्यराष्ट्रयोः ॥ ६८ ॥

जो दो ग्रह वक्री होयें तो राजाको चलायमान करे हैं, तीन ग्रह वक्री हों तो देखनेमें भयदायक युद्धको करें हैं

॥ ६७ ॥ तथा जो चार ग्रह वक्री होय तो राज्यभंग करे हैं

पांच ग्रह वक्री होय तो देशोंको भंग करनेवाले जानने ६८

अर्कशोरी भोमशोरी तमःसौरेज्यमंगलौ ॥

गुरुसौरी महायोगो महीनाशाय कल्प्यते ॥ ६९ ॥

पंच ग्रहा अन्ति चतुष्पदांश्च पट्टे वै ग्रहा

घ्नन्ति समस्तभूपान् ॥ सप्त ग्रहा घ्नन्ति स-

मस्तदेशान् अपृग्रहेऽस्यात् खलु कूटयोगः ॥ ७० ॥

रवि शनि, मंगल शनि, व राहु शनि वा गुरु मंगल, तथा

बृहस्पति शनैश्वर इन दो दो ग्रहोंका योग हो तो पृथिवीका

नाश हो ॥ ६९ ॥ पांच ग्रह जो एक राशिपर हों तो पशु-



( ११८ ) मयूरचित्रकम् ।

ओंका नाश हो छः ग्रह एक राशिपर हों तो सब राजाओंका नाश करें, सात ग्रह एक राशिपर हों तो सब देशोंका नाश होय, आठ ग्रह एक राशिपर हों तो कालकूट योग होता है जिसमें पृथिवीभरमें कोलाहल हाहाकार हो जावे ३७० ॥

अथ संक्रान्तिवशेन शुभाशुभफलम् ।

संक्रांतिर्जायते यत्र भास्करे भूसुते शनौ ॥

तस्मिन्मासि भयं घोरं दुर्भिक्षं दृष्टितो भयम् ॥ ७१ ॥

संक्रांतिसमये भानोर्भवेत्सप्तमगः शशी ॥

तदाकाले महर्घं स्यात्सर्वधान्यं सुनिश्चितम् ॥ ७२ ॥

जिस महीनेमें सूर्यकी संक्रान्ति मंगल, शनिवारमें प्रवेश हो, उस महीनेमें घोर दुर्भिक्ष और भय होवे ॥ ७१ ॥ जो संक्रान्तिके दिन सूर्यकी राशिसे सातवें घर चन्द्रमा हो तो उस महीनेमें निश्चय करके सब अन्नादिक पदार्थ मंहेंगे होवें ॥ ७२ ॥

मीने मेघे द्विमासं स्यात्तथा सिंहोदये त्रिषु ॥

मासं मिथुनगे सूर्ये द्विमासं वृषकुंभयोः ॥ ७३ ॥

कर्के मृगे च पण्मासं मासं शेषे महर्घता ॥

पूर्वसंक्रातिनक्षत्रात्परसंक्रमणं यदि ॥ ७४ ॥

द्वित्रिकक्षे सुभिक्षं स्याद्दुर्भिक्षं तुर्यपंचमे ॥

पष्टे लोका भ्रमंत्याशु गृहीत्वा स्वपरं करे ॥ ७५ ॥

मीन भेषकी संक्रान्तिमें जो सूर्यसे सातवें चंद्रमा हो तो दो महीनेतक महंगा होवे, सिंहकी संक्रान्तिमें हो तो तीन महीनेतक, मिथुनमें एक मासतक, वृष, कुंभकी संक्रान्तिमें हो तो दो महीनेतक ॥ ७३ ॥ कर्कगकरकी संक्रान्तिमें हो तो छः मासतक, शेष राशियोंकी संक्रान्तिमें हो तो एक मासतक दुर्भिक्ष जानना, पहला संक्रान्तिके नक्षत्रसे दूसरी संक्रान्ति जो ॥ ७४ ॥ दूसरे तीसरे नक्षत्रपर प्रवेश हो तो सुभिक्ष ( सस्ता ) अन्न होवे और चौथे, पाचवें नक्षत्रपर होवे तो दुर्भिक्ष हो, तथा छठे नक्षत्रपर हो तो शीघ्र लोक स्वपर हाथमें लिये मांगते फिरे ॥ ७५ ॥

अथ तिथिवारपरत्वेन शुक्लाशुक्लफलम् ॥

प्रातिपद्वधसंयुक्ता सदा दुर्भिक्षकारका ॥

( १२० ) मयूरचित्रकम् ।

ज्येष्ठमासे विशेषेण वर्षे त्वागामिके भयम् ॥ ७६ ॥

मासर्क्षात्पूर्णमा हीना समानायाधिवाधिका ॥

समर्घं च समत्वं च महर्घं च भवेत्क्रमात् ॥ ७७ ॥

सब महीनोंमें यह विचारना जो बुधवारकी प्रतिपदा हो तो दुर्भिक्षकारक जानना विशेष करके ज्येष्ठमासमें जो प्रतिपदा बुधवारकी हो तो आंगके सालमें भयकारक दुर्भिक्ष जानना ॥ ७६ ॥ महीनेके नक्षत्रसे जो पूर्णमासी तिथि कमती हो तो सस्ता भाव हो बराबर हो तो भाव समान हो अधिक हो तो महंगा होवे ॥ ७७ ॥

ज्येष्ठस्यागमने प्राज्ञैर्या तिथिः प्रथमा भवेत् ॥

केन वारेण संयुक्ता विज्ञेया सा विशेषतः ॥ ७८ ॥

भालुना पवनो वाति कुजेन व्याधिमादिशेत् ॥

चन्द्रपुत्रेण दुर्भिक्षं भवतीह न संशयः ॥ ७९ ॥

ज्येष्ठमासके लगतेही बुद्धिवान् जन विचार करें, कि प्रतिपदाके दिन कौन वार है जिससे फलकी विशेषता जानना ॥ ७८ ॥ जो प्रतिपदाको रविवार हो तो पथन

बहुत चले मंगलवार हो तो रोग होवे बुध हो तो दुर्भिक्ष  
हो इसमें संशय नहीं ॥ ७० ॥

गुरुभार्गवसोमानामेकोपि यदि जायते ॥

वर्षावधि भवेत्पृथ्वी सस्यधान्यवनाकुला ॥ ८० ॥

अथवा देवयोगेन शनिवारस्तदा भवेत् ॥

जलशोषप्रजानाशः छत्रभंगस्तदा भवेत् ॥ ८१ ॥

तथा जो गुरु, शुक्र, चंद्र इन वारोंमेंसे कोई एक वार  
हो तो वर्षपर्यन्त पृथिवी तृण, अन्न, धनसे परिपूर्ण रहे  
॥ ८० ॥ अथवा देवयोगसे शनिवार होवे तो जलको  
शोषजाय अर्थात् वर्षा नहीं होवे, और प्रजाका नाश  
तथा छत्रभंग होवे ॥ ८१ ॥

चन्द्रोदयं निरीक्षत द्वितीया लब्धजन्मनः ॥

ज्येष्ठोत्तरं ह्यमायां च भानारस्तं त्रिलोकयेत् ॥ ८२ ॥

यद्युत्तरे शशी मध्येत्वायाति दक्षिणे रवः ॥

उत्तमो मध्यमो नीचः कालः संपद्यते तदा ॥ ८३ ॥

द्वितीयाके चन्द्रमाका उदय, और ज्येष्ठमासमें अमा-

( १२२ ) मयूरचित्रकम् ।

वास्याके दिन सूर्यका अस्त देखे ॥ ८२ ॥ जो सूर्यसे उत्तरमें चन्द्रमा होवे तो समय उत्तम होवे और जो मध्यमें होवे तो मध्यम समय होवे, तथा दक्षिणमें हो तो समय अधम जानना ॥ ८३ ॥

आपाढे श्रावणे पौषे रविभौमशनेश्वराः ॥

यासरा यत्र जायंते तत्फलं यच्छृणुष्व तत् ॥ ८४ ॥

पंचार्कवारे दुर्भिक्षं पंचभौमे महद्भयम् ॥

पंचमन्दे च रोगः स्यात् शोषा वाराः शुभावहाः ८५

आपाढ, श्रावण, पौष इन महीनोंमें जो रवि मंगल शनि यह वार हों तिनका फल श्रावण करो ॥ ८४ ॥

जो पाँच रविवार हों तो दुर्भिक्ष हो, पाँच मंगलवार हों तो महाभय हो, और पाँच शनिवार हों तो रोग हो, शेषवार हों तो शुभ फल जानना ॥ ८५ ॥

आपाढे श्रावणे पौषे वैशाखे भृगुदर्शनम् ॥

गवां मृत्युः प्रजापीडाः दुर्भिक्षं राजावैग्रहः ॥ ८६ ॥

समाना ऋतवः सर्वे वांति वाताः शुभाः यदि ॥

लक्षणानि शुभानि स्युः सर्वदैव शुभं तदा ॥८७॥

आषाढ, श्रावण, पौष, वैशाख इन महीनोंमें जो शुक्रो-  
दय होवे तो गौवोंकी मृत्यु हो, प्रजाको पीडा हो, तथा  
दुर्भिक्ष हो, राजामें विग्रह होवे ॥ ८६ ॥ जो सब ऋतु-  
यें समान हों अर्थात् ऋतुओंका विपर्यय नहीं हो, पवन  
उत्तमतासे मन्द मन्द बहे अर्थात् कठोर पवन नहीं होय,  
और लक्षण शुभ हों तो समय अच्छा जानना ॥ ८७ ॥

संक्षेपेण मया प्रोक्तं तिथिवारांद्रवं फलम् ॥

ज्ञातव्यं च प्रयत्नेन ग्रन्थेस्मिन् बुद्धिमत्तरैः ३८८

इति श्रीमदवन्तिकाचार्यवराहमिहिरविर-

चितं मयूरचित्रकं समाप्तम् ।

श्रीमत् अवन्तिकाचार्य वराहमिहिरजी कहते हैं कि  
यह तिथिवारसे उत्पन्न फल मैंने संक्षेपसे वर्णन किया इस  
ग्रंथमें सम्पूर्ण कहा गया शुभाशुभ फल बुद्धिमान् जनों-  
करके यत्नपूर्वक जानना चाहिये ॥ ३८८ ॥

( १२४ ) मयूरचित्रकम् ।

लक्ष्मीपुरे बरेल्यां च नारायणमुकुन्दयोः ॥

ताभ्यां ज्योतिषग्रन्थोऽयं गंगाविष्णोः समर्पितम् १ ॥

लक्ष्मीपुर और बांसबरेलीमें संस्कृत व भाषापुस्तकालयके स्वामी पंडित नारायणप्रसाद मुकुन्दराम तिन दोनोंने यह मयूरचित्रक नाम ज्योतिषग्रन्थ भाषाटीका सहित सेठ गंगाविष्णु श्रीकृष्णदासजीको समर्पण किया ॥ १ ॥

रामबाणनिधीन्द्रवदे चैत्रे मास्यसिते दले ॥

पंचम्यां भौमवारे च भाषा संपूर्णतामगात् ॥ २ ॥

श्रीमन्महाराजा विक्रमादित्यजीके संवत् १९५३ चैत्र कृष्णपक्ष पंचमी भौमवारको यह मयूरचित्रककी भाषा सम्पूर्ण भई ॥ २ ॥

वापेयं रचिता प्रेम्णा श्रीनारायणशर्मणा ॥

अत्र कुत्राप्यशुद्धं चेत्क्षन्तव्यं पूर्णसज्जनैः ॥ ३ ॥

यह भाषा प्रेमपूर्वक श्रीनारायणप्रसादजीने रचना

करी, इसमें कहोंगी कुछ अशुद्धता हो गई हो तो पूर्ण सज्जन पंडितों करके क्षमा करनी योग्य है ॥ ३ ॥

इति श्रीमत्पण्डितनारायणप्रसादमुकुन्दरामरुतभा-  
पाटीकान्वितं भयूरचित्रकं समाप्तम् ॥

समाप्तोऽयं ग्रन्थः ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,

“लक्ष्मीवैकटेश्वर ” छापाखाना,  
कल्याण-मुंबई.



( १२४ ) मयूरचित्रकम् ।

लक्ष्मीपुरे बरेल्यां च नारायणमुकुन्दयोः ॥

ताभ्यां ज्योतिषग्रन्थोऽयं गंगाविष्णोः समर्पितम् ॥

लक्ष्मीपुर और बांसबरेलीमें संस्कृत व भाषापुस्तका-  
लयके स्वामी पंडित नारायणप्रसाद मुकुन्दराम तिन दोनोंने  
यह मयूरचित्रक नाम ज्योतिषग्रन्थ भाषाटीका सहित  
सेठ गंगाविष्णु श्रीकृष्णदासजीको समर्पण किया ॥ १ ॥

रामवाणनिधीन्द्रवदे चैत्रे मास्यसिते दले ॥

पंचम्यां भौमवारे च भाषा संपूर्णतामगात् ॥ २ ॥

श्रीमन्महाराजा विक्रमादित्यजीके संवत् १९५३  
चैत्र कृष्णपक्ष पंचमी भौमवारको यह मयूरचित्रककी  
भाषा सम्पूर्ण भई ॥ २ ॥

वापयेयं रचिता प्रेम्णा श्रीनारायणशर्मणा ॥

अत्र कुत्राप्यशुद्धं चेत्क्षन्तव्यं पूर्णसज्जनैः ॥ ३ ॥

यह भाषा प्रेमपूर्वक श्रीनारायणप्रसादजीने रचना

भाषाटीकासहितम् । ( १२५ )

करी, इसमें कहींसी कुछ अशुद्धता हो गई हो सो पूर्ण  
सज्जन पंडितों करके क्षमा करनी योग्य है ॥ ३ ॥

इति श्रीमत्पण्डितनारायणप्रसादसुकुन्दरामरुतमा-  
पाटीकान्वितं मयूराचित्रकं समाप्तम् ॥

समाप्तोऽयं ग्रन्थः ।

---

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,  
“लक्ष्मीवैकटेश्वर ” छापाखाना,  
कल्याण-मुंबई.

# ज्योतिष-ग्रन्थाः ।

नाम.

की.रु.आ.

अयोध्याजातक-भाषाटीकासमेत. .... ०-४

अर्घप्रकाश-भाषाटीकासमेत । इसमें  
तेजी-मन्दी वस्तु देखनेका विचार  
भलीभाँति लिखागया है. ... ०-५

आनन्दप्रकाश-भाषाटीकासमेत । यह  
ग्रन्थ ज्योतिषियोंको अतीव उपयोगी  
है । इसमें-रोगकी स्थिति, असाध्य-  
रोग किस प्रकार शान्त होगा तथा  
रोगमुक्ति, स्नानदानादि कितनेही  
उत्तम विषय लिखेगये हैं. ... ०-३

आर्यभटीय-( ज्योतिषशास्त्र ) संस्कृत  
टीका भाषाटीकासमेत ... १-०

कर्णकुतूहल-सटीक तथा उदाहरणस-  
हित । ब्रह्मपक्षीय गणित ग्रन्थ .... ०-१२

करणन्दुशेखर—इसमें रव्यादि ग्रहोंकी  
 सारणी भलीभाँति दी गई है । तथा  
 सिद्धान्तोक्त सब विषय संक्षेपसे  
 इसमें आगये हैं. .... ०-४

कीर्तिपञ्चांग—संवत् १९७८ का पं०  
 महीधरशर्माकृत । हिमालयादि देशोंमें  
 यही पंचांग प्रचलित है .... ०-६

केरलतत्त्वप्रश्नसंग्रह—भाषाटीकासमेत ।  
 प्रश्न कहनेमें यह ग्रन्थ तात्कालिक है. ०-६

केशवीजातक—सान्वय सोदाहरण जगदीश-  
 त्रिपाठीकृत भाषाटीकासहित । इस  
 ग्रन्थका गणित जन्मपत्रिका बनानेमें  
 अपूर्व है । ग्लेज .... २-०  
 ” तथा रफ. .... १-१२

‘नाम,

की.रु.आ.

केतकीपञ्चांग-शके १८४३ का । इस  
 पञ्चांगका गणित बहुत ठीक है और  
 ग्रहण इत्यादिक बराबर मिलते हैं. ... ०-२  
 खेटकौतुक-भापाटीकासमेत । इसमें  
 नव्वाव खानखानेने चमत्कारिक  
 फलादेश कहाहै. .... ०-५

गर्गमनोरमा-संस्कृतटीका तथा भापाटी-  
 कासहित । इसमें प्रश्नसे गर्गस्थ पुत्रक-  
 न्यादिका ज्ञान, मौष्टिकादि वस्तुज्ञान  
 तथा द्रव्योत्पाटनादि प्रकार सुगम  
 रीतिसे वर्णित हैं. .... ०-६

पुस्तकें मिलनेका ठिकाना—

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,  
 “ उद्दमीवेङ्कटेश्वर ” छापखाना  
 कल्याण-मुंबई.